

कैनेडा से प्रकाशित साहित्यिक पत्रिका

Year 19, Issue 75

July-Sept., 2022

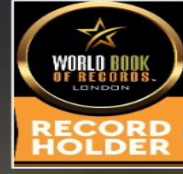
वसुधा



VASUDHA A CANADIAN PUBLICATION

**FOUNDER-EDITOR-PUBLISHER : DR. SNEH THAKORE
AWARDED BY THE PRESIDENT OF INDIA**

वर्ल्ड बुक ऑफ़ रिकॉर्ड (गोल्ड एडीशन) लंदन



काव्य सलिला

भारत के रेमन मैग्सेसे अवार्डीज़ पर प्रथम अंतरराष्ट्रीय काव्य संग्रह

सन्तोष खन्ना एवं डॉ. साधना गुप्ता



संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक

डॉ. स्नेह ठाकुर

भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत

वर्ष १९ - अंक ७५, जुलाई-सितम्बर २०२२



WORLD BOOK OF RECORDS

LONDON

CERTIFICATE OF PARTICIPATION

Dr. Sneh Thakore

Toronto, Ontario
Canada

Has participated in the
first poetry book on 59 Indian Ramon Magsaysay Awardees
'Kavya Salila' (ISBN: 978-93-93028-45-7) edited & published by
Dr. Santosh Khanna and Dr. Sadhana Gupta. The book contains
writing of poets on Awardees' life achievements.

Date: 15 December 2021

Santosh Shukla

Santosh Shukla
Supreme Court, Advocate
President & CEO



WORLD BOOK OF RECORDS

UNITED KINGDOM ■ INDIA ■ SWITZERLAND
www.worldbookofrecords.uk



वसुधा

(पोस्ट-डॉक्टरल फ़ेलोशिप अवार्डी)

(भारत के राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में "हिन्दी सेवी सम्मान" से सम्मानित)

संस्थापक, सम्पादक व प्रकाशक : डॉ. स्नेह ठाकुर

| शीर्षक | रचयिता | पृष्ठ |
|--|-------------------------------|-------|
| सम्पादकीय | | २ |
| एक और गाँधी - बिनोवा भावे | डॉ. सन्तोष खन्ना | ६ |
| हर बाधा के आगे हल खोजने के कला पारखी - चिंतामणि देशमुख | डॉ. साधना गुप्ता | ७ |
| युग प्रेरक पत्रकार : अमिताभ मानवीयता का सजल प्रतिरूप - मदर टेरेसा | डॉ. संजीव कुमार | ८ |
| बना पर्यायवाची डेयरिंग का दारा नुसूरवानी खुरोडी | संतोष बंसल | ९ |
| धवल क्रांति के जनक डॉ वर्गीश कुरियन | अजय कन्नूरकर | १० |
| श्वेत क्रांति के जनक - त्रिभुवन दास पटेल | डॉ. अलका शर्मा | ११ |
| लिटरेरी लेडी - वेल्थी हॉन्सिंगर फिशर | ओम प्रकाश चंद्राकर | १२ |
| सर्वोदय समाजवादी - जयप्रकाश नारायण | डॉ. शिखा कौशिक 'नूतन' | १३ |
| नारी आत्म-निर्भरता का मंत्र - डॉ. कमलादेवी चट्टोपाध्याय | डॉ. नीता बोरा शर्मा | १४ |
| सत्यजित रॉय - एक प्रेरणा | डॉ. स्नेह ठाकुर | १५ |
| हरित क्रांति के प्रणेता - डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन | डॉ. निशा केवलिया शर्मा | १६ |
| आठवाँ स्वर बन छाया लक्ष्मी - एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी | डॉ. अलका मोहन शर्मा | १७ |
| पत्रकारिता के आदर्श - बी. जी. वर्गीज़ | डॉ. दीपा पालक्किल कालियत | १८ |
| अंतर्राष्ट्रीय समझ से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी - हेर्निंग होल्क-लार्सन | डॉ. शकुन्तला कालरा | १९ |
| रंगमंच का क्रांतिवीर - शम्भु मित्रा | अश्विन गोयल | २० |
| अनन्य नेतृत्व क्षमता की मिसाल - इला रमेश भट्ट | प्रीति राघव | २१ |
| माबेले तू कल्याणी है - माबेले एरोले | डॉ. जय भगवान शर्मा | २२ |
| सार्थक चेतना की मिसाल - डॉक्टर रजनीकांत शंकरराव अरोल | डॉ. पूनम माटिया | २३ |
| रचनात्मक संचार कला के प्रतीक - | डॉ. कैलाश चन्द्र शर्मा 'शंकी' | २४ |

| | | |
|---|-----------------------|----|
| गौर किशोर घोष | अंकिता गोयल | २५ |
| पद्मविभूषण डॉ. प्रमोद करण सेठी | प्रो. मंगला रानी | २६ |
| पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट | डॉ. पुष्पा जोशी | २७ |
| ग्राम्य विकास के लिए कटिबद्ध | | |
| मनी भाई देसाई | डॉ. रामचन्द्र स्वामी | २८ |
| विश्व प्रेस स्वतंत्रता नायक - अरुण शौरी | मधुरानी | २९ |
| “कॉमन मैन” के हास्य-व्यंग्य चितेरे - | | |
| कार्टूनकार रासीपुरम कृष्णराव लक्ष्मण | अरुण कुमार कुलश्रेष्ठ | ३० |
| मानवता के पुजारी मुरलीधर देवीदास आमटे | पुष्पा सिन्हा | ३१ |
| अर्थशास्त्री लक्ष्मीचंद जैन | डॉ. मनोरमा | ३२ |
| कला पारखी के. वी. सुबन्ना | श्रीमती सरोज शर्मा | ३३ |
| बीसवीं सदी के महान् संगीतज्ञ - रवि शंकर | मोनिका गोयल | ३४ |
| परिवार नियोजन की अलख जगाने | | |
| वाली बानू जहाँगीर कोया जी | पूनम कुमारी | ३५ |
| जुनून, साहस, सेवा की मिसाल किरण बेदी | डॉ. कीर्ति गोयल | ३६ |
| धर्म दर्शन, अध्यात्म पुरोधा - | | |
| श्री पांडुरंग शास्त्री आठवले | डॉ. अर्चना प्रकाश | ३७ |
| जनतंत्र के प्रहरी - टी. एन. शेषन | डॉ. विदुषी भारद्वाज | ३८ |
| अनसुनी कहानियों की अभिव्यक्ति बनी | | |
| महाश्वेता देवी | आशीष कुमार साव | ३९ |
| पर्यावरण के साधक - महेश चंद्र मेहता | डॉ. राजेश बतरा | ४० |
| मलिन बस्तियों का मसीहा - | | |
| जॉकिन अर्पुथम | किरण चावला कपूर | ४१ |
| शक्ति की प्रतिमूर्ति - अरुणा राय | महेंद्र मिश्रा | ४२ |
| जलपुरुष राजेंद्र सिंह | किशोर सिंह चौहान | ४३ |
| एक ऐसे व्यक्तित्व का करेंगे हम बखान - | | |
| संदीप पांडे | कमल कान्त वत्स | ४४ |
| निर्भीक, निडर, अडिग लोकतंत्र प्रहरी - | | |
| जेम्स माइकल लिंगदोह | डॉ. ज्योत्सना शर्मा | ४५ |
| ‘हर बालक को मिले कलम का अधिकार’ - | | |
| दिलवाने को कटिबद्ध - शांता सिन्हा | डॉ. दुर्गेश नंदिनी | ४६ |
| भारतीय नौसेना की शान - | | |
| शांतिदूत लक्ष्मीनारायण रामदास | मंजुरानी जैन | ४७ |
| मानवता की सच्ची देवी - विश्वनाथन शांता | डॉ. सीमा कुमारी चौधरी | ४८ |
| भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन की ओर अग्रसर - | | |
| अरविन्द केजरीवाल | डॉ. प्यारेलाल आदिले | ४९ |
| स्वर्णिम समाज के निर्माण का | | |
| पथ प्रदर्शक पालागुम्मि साईनाथ | डॉ. सपना | ५० |
| शिशु की पहली धुली मुस्कान - | | |

| | | |
|-------------------------------------|-----------------------------------|----|
| मंदाकिनी आमटे | प्रियंका सिंह | ५१ |
| समाज सेवा को संकल्पित | | |
| डॉ. प्रकाश बाबा आमटे | डॉ. अभिषेक मिश्रा | ५२ |
| अप्प दीप - दीप जोशी | डॉ. मृदुला शर्मा | ५३ |
| जाग्रत चेतना की प्रतिमान - | | |
| नीलिमा मिश्रा | आर्यावर्ती सरोज आर्य | ५४ |
| सौर्य पुंज के सूर्य - हरीश हांडे | अलका अस्थाना | ५५ |
| ग्रामीण विकास के लिए कटिबद्ध - | | |
| कुलंदेई फ्रांसिस | श्रीमती सुमन लता शर्मा | ५६ |
| समाज सेवा के सूर्य - अंशु गुप्ता | अरविन्द भारत | ५७ |
| शुचिता के प्रतीक - संजीव चतुर्वेदी | सौम्या पाण्डेय 'पूर्ति' | ५८ |
| स्वच्छता की पहचान - बेजवाड़ा विल्सन | रेनू माथुर | ५९ |
| कला की शक्ति के प्रति प्रतिबद्ध - | | |
| टी.एम. कृष्णा | डॉ. सपना सक्सेना दत्ता 'सुहासिनी' | ६० |
| मनोरोगियों के मसीहा - | | |
| डॉ. भरत वातवानी | श्रद्धेश नंदिनी | ६१ |
| स्वर्णिम विहान - सोनम वांगचुक | अमिता त्रिपाठी 'अशेष' | ६२ |
| जो रुका नहीं, जो झुका नहीं - | | |
| रवीश कुमार पाण्डेय | अनुरागेंद्र कुमार निगम | ६३ |
| राष्ट्राध्यक्ष और आध्यात्मिक - | | |
| गुरु दलाईलामा तेनजिन ग्यात्सो | डॉ. उषा देव | ६४ |

रचनाओं में निहित विचार तथा मन्तव्य रचनाकारों के निजी विचार तथा मन्तव्य हैं। 'वसुधा' रचनाकारों के विचारों के लिए उत्तरदायी नहीं है। प्रकाशक की आज्ञा बिना कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाएगा।

रचनाएँ भेजने के लिए सम्पर्क पता :

16 Revlis Crescent, Toronto, Ontario M1V-1E9, Canada. TEL. 416-291-9534

वर्षिक शुल्क Annual subscription.....\$25.00

डाक द्वारा By Mail, Canada & USA.....\$35.00, Other Countries.....\$40.00

Website: <http://www.Vasudha1.webs.com>

Email : dr.snehthakore@gmail.com

सम्पादकीय

वसुधा का यह सौभाग्य है कि उसका यह अंक ऐसी महान् विभूतियों से भरा हुआ है जिन्होंने अपने अभूतपूर्व, विलक्षण कार्यों से मानव जाति को जहाँ एक ओर सम्बर्धित किया है, वहीं दूसरी ओर ५९ कवि-कवयित्रियों ने इनके भव्य, सर्वोत्तम मानवीय गुणों को एक पुस्तक के रूप में लिपिबद्ध कर, समाज के लिए उन आदर्शों का प्रतिपादन किया है जो ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में, किसी भी जन-जाति के लिए आदर्श सिद्ध होंगे। यह मेरा भी सौभाग्य है कि जहाँ एक ओर इन महान् विभूतियों में से एक, माननीया कमला देवी चट्टोपाध्याय पर लिखने का सुअवसर मुझे प्राप्त हुआ, वहीं दूसरी ओर वसुधा के संस्थापक, सम्पादक एवं प्रकाशक के रूप में, सभी कवियों के प्रशंसनीय रचनात्मक, काव्यात्मक कला-कृतियों को वसुधा के इस अंक में समेट कर वसुधा के आदरणीय, प्रिय पाठकों के लिए उनके आदर्शों को प्रस्तुत करने का संयोग भी प्राप्त हुआ। प्रिय बहन आदरणीया डॉ. सन्तोष खन्ना जी की आभारी हूँ जिन्होंने यह प्रस्ताव रख जहाँ एक ओर वसुधा का मान बढ़ाया, वहीं दूसरी ओर इस अद्भुत काव्यात्मकता को आप जैसे अनन्य विद्वत् साहित्य-समाज को समर्पित करने का, आपके समक्ष रख देश-विदेश के ५९ प्रतिभाशाली कवि/कवयित्रियों की प्रतिभा से परिचित होने का, संयोग प्रदान किया। सन्तोष जी के अकथनीय प्रयासों से पुस्तक “काव्य सलिला” प्रकाशित हुई है। इस अवधि में आई चुनौतियों का उन्होंने बड़ी कर्मठता से सामना किया है। सन्तोष जी साहित्यकार होने के साथ ही साथ जहाँ एक ओर पूर्व न्यायाधीश हैं, वहीं वे “महिला विधि भारती” की प्रधान सम्पादक भी हैं। “काव्य सलिला” के कवि-कवयित्रियों की इस अमूल्य निधि हेतु सन्तोष जी का हृदय की अतल गहराइयों से आभार। साथ ही साथ इस सम्पादकीय में प्रिय भगिनी सन्तोष जी ने इसमें सहभागिता कर जो मेरा स्नेहसिक्त मान बढ़ाया है, इस हेतु उनके धन्यवाद के लिए मेरे पास शब्द कम पड़ रहे हैं; बस भावनाएँ उमड़-धुमड़ कर यह अहसास करा रही हैं कि स्नेह को इतना स्नेह मिला और इस हेतु मैं भाग्यशाली हूँ। “काव्य-सलिला” के सभी रचनाकारों का हृदय की अतल गहराइयों से नमन; सभी को साधुवाद। अब आप भी आनंद से पढ़िए सन्तोष जी की कलम से निकली काव्य सलिला की कथा -

“भारत के रेमन मैग्सेसे अवार्डिज़ पर आधारित अंतरराष्ट्रीय काव्य संग्रह 'काव्य सलिला' में रेमन मैग्सेसे अवार्डिज़ पर हिंदी साहित्य के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय साहित्यकारों की कविताओं को वर्षों से कनाडा की धरती पर हिंदी का परचम लहरा रही अंतरराष्ट्रीय साहित्य पत्रिका 'वसुधा' में स्थान दे कर इस पत्रिका की यशस्वी साहित्यकार और सम्पादक डॉ. स्नेह ठाकुर ने अत्यंत महत्वपूर्ण सारस्वत कार्य किया है क्योंकि यह कविताएँ कोई साधारण रचनाएँ नहीं, बल्कि विभिन्न साहित्यकारों की भारत के अभूतपूर्व व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी, अदम्य साहस और उत्कट लग्न और परिश्रम के प्रतीक और प्रेरक ५९ रेमन मैग्सेसे अवार्डिज़ मनीषियों की उपलब्धियों को रेखांकित कर उन पर रची कविताएँ उनके एकनिष्ठ परिश्रम और सम्वेदनशीलता का निकष तो है ही, यह सारस्वत अनुष्ठान किसी भी भाषा, विशेष रूप से देश की राष्ट्र भाषा हिंदी में प्रथम बार किया गया जो एक रिकार्ड ब्रेकिंग परिघटना है, विश्व कीर्तिमान स्थापित करने वाले इस कार्य को वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड, यू.के. में शामिल किया गया है। जब कोई इस प्रकार विश्व स्तरीय कार्य होता है उसका अभिप्राय होता है कुछ अलग, अद्भुत, अद्वितीय और अनुपम, जो प्रेरक और अनुकरणीय दोनों ही होते हैं। उसके लिए सभी को अपनी सर्वोत्कृष्ट रचनाशीलता का परिचय देना होता है।

रेमन मैग्सेसे पुरस्कार फिलीपींस के सातवें राष्ट्रपति रेमन मैग्सेसे की स्मृति में वर्ष १९५७ में स्थापित किया गया था। रेमन मैग्सेसे ने लोकतांत्रिक व्यवस्था में ईमानदार शासन, एकनिष्ठ जनसेवा

और सर्वोत्कृष्ट आदर्शों की स्थापना की थी। रेमन ५० वर्ष के अपने संक्षिप्त जीवन काल में आरम्भ से लेकर अंत तक अपने देश और देश की जनता के लिए संघर्षरत रहे और जब वे अंततः दिसम्बर, १९५३ को फिलीपींस गणराज्य के राष्ट्रपति बने तो उन्होंने गरीबों और छोटे किसानों की दशा में सुधार लाने का बीड़ा उठाया किंतु तभी १९५७ को उनकी एक विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। उन्हीं की स्मृति में स्थापित यह पुरस्कार शीघ्र ही अपनी चयन प्रक्रिया और अन्य कारणों से एक प्रतिष्ठित पुरस्कार बन गया और इसे एशिया के नोबल पुरस्कार की संज्ञा दी जाने लगी। यह पुरस्कार एशिया के उन व्यक्तियों एवं संस्थाओं को प्रदान किया जाता है जिन्होंने अपने क्षेत्र में विशेष रूप से उल्लेखनीय कार्य किया हो।

रेमन मैग्सेसे पुरस्कार हर वर्ष ३१ अगस्त को रेमन मैग्सेसे की जयंती के अवसर पर फिलीपींस की राजधानी मनीला में आयोजित एक समारोह में दिये जाते हैं। यह पुरस्कार चयन करते समय जाति, धर्म, लिंग और राष्ट्रीयता के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है। इस पुरस्कार के संस्थापना वर्ष में अर्थात् १९५७ में यह पुरस्कार भारत के गाँधी कहे जाने वाले विनोबा भावे को उनकी अमूल्य जनसेवा के लिए दिया गया और वर्ष २०२१ तक आते-आते यह पुरस्कार भारत के ५९ कर्मवीर और कर्मशील भारतीयों को दिया गया जिनमें मदर टेरेसा, किरण बेदी, कमला चट्टोपाध्याय आदि तेरह महिलाएँ भी हैं और साथ में बौद्ध धर्म के महा व्यक्तित्व दलाई लामा भी हैं जो स्वयं को हमेशा इस देश का पुत्र कहते हैं। भारत के इन सभी नायिक-नायिकाओं पर प्रेरणाप्रद यह सभी कविताएँ प्रतिष्ठित 'वसुधा' पत्रिका के एक ही अंक विशेषांक में स्थान पा कर अपने आप में पुनः एक नया कीर्तिमान स्थापित करेंगी क्योंकि यह सभी रचनाएँ एक ही अंक में उपलब्ध रहेंगी जिससे 'वसुधा' पत्रिका इस अर्थ में भी एक नया इतिहास रचेगी कि पाठक वर्ग विशेष रूप से वर्तमान पीढ़ी और आगामी पीढ़ियाँ प्रेरणा के इस महासूर्य से आलोकित होती रहेंगी। "वसुधा" की सम्पादक डॉ. स्नेह ठाकुर को ऐसा प्रकाश स्तम्भ बनने के लिए मेरी अपनी ओर से और उन सभी साहित्यकारों की ओर से, जिनकी कविताएँ प्रकाशित की गई हैं, बहुत-बहुत आभार और अभिनन्दन।

शुभकामनाओं सहित,

डॉ. सन्तोष खन्ना

प्रधान सम्पादक, 'महिला विधि भारती' त्रैमासिक पत्रिका।



इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री शंभू नाथ श्रीवास्तव, आर्ट ऑफ लिविंग के प्रतिष्ठित टीचर एवं अधिवक्ता श्री तिलक राज टक्कर, अंतरराष्ट्रीय ख्यात एवं राष्ट्रीय कवियित्री डॉ. कीर्ति काले, वर्ल्ड बुक ऑफ रिकार्ड, यू.के. की उपाध्यक्ष श्रीमती सपना सुकुल, डॉक्टर्स वीयोंड बार्डर्स की डॉ. आशु खन्ना एवं विधि भारती परिषद् की महासचिव डॉ. सन्तोष खन्ना भारत।

१. एक और गाँधी - विनोबा भावे

डॉ. सन्तोष खन्ना

धर्म ध्वजा वाहक विनोबा, आज़ादी के संत सिपाही थे
भूदान आंदोलन के प्रणेता, गाँधीवाद के राही थे।
अवतरित हुए जब जग में, गाँधी क्षितिज पर छाये थे
भींगी भी नहीं थी मसं पूरी, गाँधी प्रभाव में आये थे
सौंप दी हर साँस राष्ट्र को, जन-जन के काम आये थे
सत्य, संयम, अहिंसा, समता, जीवन सिद्धांत अपनाये थे।

शिक्षा-दीक्षा छोड़ अधूरी, राष्ट्र के रण में कूद पड़े
हिला दी नींव अँग्रेज़ों की, विदेशी सत्ता से जूझ पड़े
न रुके कभी न झुके कभी, जेल जाने से भी नहीं हटे
हर बार जेल के संकट को, अवसर बनाने के लिए डटे।
जब-जब कारावास किया, कैदियों को गीता ज्ञान दिया
अहिंसा सद्भावना के बल पर, असम्भव अपने नाम किया
स्वतंत्रता आंदोलन रण में, बड़-चढ़ कर उसमें भाग लिया
बहुभाषाविद् अनुवादविद्, धर्म ग्रंथों का अनुवाद किया।

गाँधी के सत्याग्रह यज्ञ के, वही पहले सत्याग्रही थे
अँग्रेज़ी कफन में कील ठोक, अरि के वह विकट विग्रही थे
दवे, कुचले गरीब जन हित में, सर्वोदय आंदोलन चलाया
एशियाई मैगसेसे पुरस्कार, भारत में सबसे पहले पाया।
हरिजनों के परम हित में, भूदान का आह्वान किया
उनकी तेजस्वी वाणी सुन, भूस्वामियों ने भूदान किया
लाखों एकड़ मिली भूमि, सब भूमिहीनों में बाँट दिया
हुआ विश्व चमत्कृत था, जन-जन का उत्थान किया।

महिला स्वलम्बन मंत्र ले कर, 'ब्रह्म विद्या मंदिर' निर्माण किया
कृतज्ञ राष्ट्र ने निष्काम सेवा हित, 'भारत रत्न' सम्मान दिया।
'जय जगत' के अनन्य उपासक, परिवार समझते जग को
धर्म ध्वजा वाहक विनोबा, प्रेरणा दो तुम हम सब को॥



२. हर बाधा के आगे हल खोजने के कला पारखी - चिंतामणि देशमुख

डॉ. साधना गुप्ता

सजे स्वप्न नयन मध्य, अस्तित्व को तलाशने,
जुनून का कद जब, ख्वाहिशों से बड़ा बने।
बुद्धि की तीक्ष्णता, आत्मविश्वास संगी रहे,
अँधियारे के द्वार रोशनी, बन वही जले।।

संक्रांति मकर शुभ दिन, उल्लास सुनहरा छाया,
द्वारिका-भागीरथी आँगन, शिशु स्वर लहराया।
"चिंतामणि" संज्ञा, स्वत्व अस्तित्व भाव भाया,
बन बड़े खज़ाने का स्वामी, देश का गौरव बढ़ाया।।

बना ज्ञान शस्त्र रेत से जवाहरात सृजन सिखलाया,
इंडियन सिविल सर्विस परीक्षा में प्रथम स्थान पाया।
अंग्रेज़ शासन - आई.सी.एस.अधिकारी, "सर" ताज सजाया,
सैकेट्री-द्वितीय गोलमेज़, ज़ापन से लोहा मनवाया।।

रिजर्व बैंक गवर्नर जनरल बने, महनीय कार्य किया,
निजी शेयरधारक बैंक को राष्ट्रीय बैंक बना दिया
लक्ष्य दौड़ता है रग में जब, वह रुकता न थमता है,
विश्वास दिलाया यूँ जग को, हर बाधा के आगे हल है।।

बन भारत का वित्तमंत्री, विकास को गतिमान किया,
वित्तीय संरचना में, सामाजिक नियंत्रण को स्थान दिया।
बने जब यू.जी.सी. अध्यक्ष, शिक्षा में सुधार किया,
नाना भाषाविज्ञ थे वे, संस्कृत काव्य-संग्रह सृजित किया ।।

बदलाव के लिए प्रतिबद्ध, खतरों से टकराना सिखलाया,
स्तम्भ समाज के परम्परा, प्रतिभा अनुशासन को अपनाया।
एशियाई नोबल रेमन मैग्सेसे, पा कर भारत का मान बढ़ाया,
देश की गरिमा गौरव बन, देशमुख देशसेवा में नाम कमाया

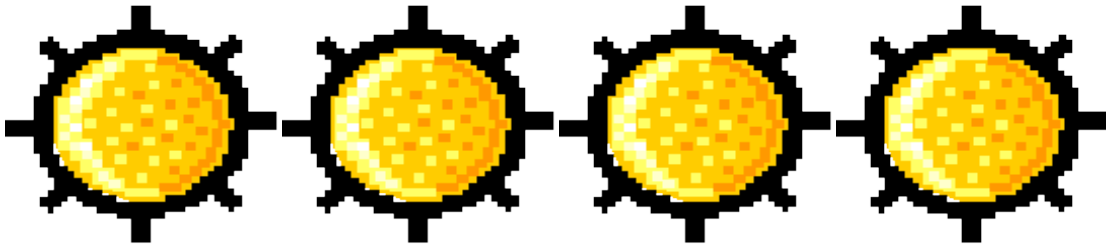


३. युग प्रेरक पत्रकार - अमिताभ

डॉ. संजीव कुमार

तुम अमित आभ,
ज्यों सूर्य प्रखर।
तुम महत्प्राण
जन-जन का स्वर॥
तुम साहस का
भूधर विशाल।
तुम मेधा का
द्विगुणित प्रवाल॥
तुम धनी लेखनी के
सशक्त।
तुम चेतनता के
प्रबल भक्त॥
तुम बंग विभूषण,
पद्म श्री।
रेमन मैग्सेसे
सम्मानित भी ॥
सर्वत्र विभूषित
सर्व-व्याप्त।
तुम पत्रकार
अधिकार प्राप्त॥
तुम जन गण का
आलम्ब सुदृढ।
साहस प्रदान करते
सत्वर॥
तुम सूक्ष्म शोधकर्ता,
प्रवीण।
कुव्यवस्था की द्रुत
बजा वीणा॥

करते कुव्यवस्था
पर प्रहार।
आँसू से होते
समाकर॥
पीड़ित आत्माओं के
साहस।
जन गण का हित
“नेपथ्य दरश”॥
कितने मुआमले
खोल खोल।
पीड़ित व्यक्ति को
दिए बोल॥
यह साहस है
सम्माननीय॥
और कार्यशीलता
अतुलनीय॥
तुम युग प्रेरक
तुम युवादर्श
दिखलाया जग को
उच्च अर्श॥
कर जागरूक
जन मानस को।
धोया सब के ही
आलस्य को धोया सब
तुम रहे सदा ही
कार्य सिद्ध।
डरते थे तुमसे
सभी गिद्ध॥



४. मानवीयता का सजल प्रतिरूप मदर टेरेसा

संतोष बंसल

भारत की न थी, भारतीय बनी
सीमाओं में न सिमट, मानवीयता से सनी॥
दुनिया में मानवता की पहचान बनी,
धरती पर इंसानियत की जान बनी।

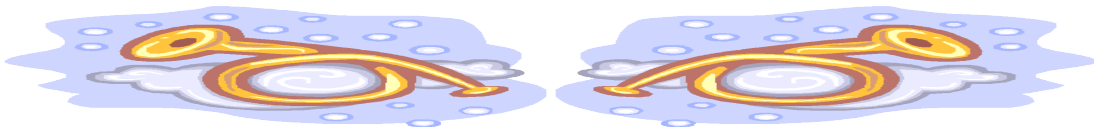
पहचान मिली - 'एग्रेस गोंकसे बोजसेऊ',
अलबेनियन के अर्थ जैसी थी - कली।
महकती फूल सी अधखिली, अविकसित,
अपने कार्यों से खिलकर सुंदर सुमन बनी।

बारह वर्ष की उम्र, सेवामय जीवन अपनाया
सारे विश्व के लोगों में प्रेम-पुष्प सरसाया।
भूखे-नंगे तन को रोटी-कपड़ा दे जिलाया,
वंचित-बेसहारा को घर में सुलाया॥

कोढ़ियों के घाव भर, हृदय से लगाया,
अनाथों की बन माँ, उनका मन सहलाया,
शोषितों को गले लगा उन्हें जीना सिखाया,
शरणार्थियों को अपना, आश्रम बनवाया।

सर्वधर्म समभाव का मार्ग अपनाया,
अंतर्राष्ट्रीय सद्भाव से 'रेमन मैग्सेसे' पाया।
शांति की तुम बनी थी अद्भुत अवतार,
मिला 'शांति', 'पद्मश्री', 'नेहरू' 'नोबेल' पुरस्कार'॥

अहिंसा, शांति, सेवा, त्याग, सजल करुणा प्रतिरूप,
शुद्ध-बुद्ध महान् आत्मा, प्रेम की प्रतिमूर्त।
विश्वभारती ने 'देशिकोत्तम पदवी' से मान किया,
'वेटिकन' पोप फ्रान्सिज ने 'संत' सम्मान दिया ॥



५. बना पर्यायवाची डेयरिंग का दारा नुसूरवानी खुरोडी

अजय कन्नूरकर

"डेयरिंग का पर्यायवाची" बना
पाँचवे दशक में उभर कमाल किया
दारा नुसूरवानी खुरोडी का खुदा ने
भारत को एक कीमती लाल दिया।

दूध की नदियों का है यह देश,
सच करने की उसने ठानी थी
इंपिरियल संस्थान में ले शिक्षा
दुग्ध क्रांति की गूँजी वाणी थी।

बम्बई को कार्यक्षेत्र बनाया,
बने वे कृषि विपणन अधिकारी।
एगमार्क ग्रेडिंग प्रणाली साकार कर
दूध विपणन पर रिपोर्ट की थी जारी।

आरे मिल्क कॉलोनी की की स्थापना
टोंड दूध अवधारणा का सूत्रपात किया
सुरक्षित दूध नीति को आकार दिया
नए दुग्ध कानूनों को आधार दिया ।

बॉम्बे मिल्क स्कीम की नींव रखी
की गई पोलसन डेयरी से दूध खरीद
नाना परियोजनाओं में सहयोग कर
यूनीसेफ उनके कौशल का हुआ मुरीद

वर्ली डेयरी को देश दुनिया में चमकाया
सबसे बड़ी दूध प्रसंस्करण इकाई बनाया
जन-जन की पहुँच में पहुँचा टोंड दूध
तुमने रेमन मैग्सेसे का पुरस्कार पाया।
राष्ट्र ने पद्म भूषण दे आभार जताया।



६. धवल क्रांति के जनक डॉ. वर्गीश कुरियन

डॉ. अलका शर्मा

सकल विश्व में गूँजी जिसके कार्यों की धमक,
सहकारी दुग्ध मॉडल दे, बने धवल क्रांति जनक,
होनहार वर्गीश जन्मे, केरल कोझीकोड था स्थान,
लोयला कॉलेज से हुए स्नातक, विषय था विज्ञान।

छात्रवृत्ति लेकर कुरियन जा पहुँचे अमेरिका,
मेकैनिकल इंजीनियरिंग, सबके मन को हरा,

ज्ञान, धन, वैभव सब कुछ, पर था परदेश,
देश हित जीवन समर्पित, मन अटका स्वदेश।

डेरीफार्मिंग का वहाँ जो विशेष ज्ञान पाया,
आकर स्वदेश उसे जनहित में अपनाया,
मिलियन डॉलर आईडिया, कुरियन को आया,
तभी वे फादर ऑफ व्हाइट रेवोलुशन कहलाया।

भारत में कृषि विकास कार्यक्रम को अपनाया,
तीव्र गति से फिर उसे जनहित में आगे बढ़ाया,
वर्गीज दुग्ध क्षेत्र में नित ला रहे थे नवीन क्रांति
भारत को अमेरिका से ज़्यादा सम्मान दिलाया।

अल्प समय में देश में डेरी उद्योग यूँ फैलाया,
अमूल बटर का नाम सबके मन को भाया,
राष्ट्रव्यापी अमूल दुग्ध मॉडल तैयार किया,
अध्यक्ष डेरी विकास बोर्ड पद प्राप्त किया।

दूरदर्शिता संग सामुदायिक नेतृत्व को अपनाया,
ऑपरेशन फ्लड का सूत्र-धार कुरियन कहलाया,
अमूल्य सेवाओं के बल पाया रेमन मैग्सेसे पुरस्कार,
"आनन्द मॉडल" कर्ता, बने जन स्वावलम्बन आधार।



७. श्वेत क्रांति के जनक : त्रिभुवन दास पटेल

ओमप्रकाश चंद्राकर

त्रिभुवन दास पटेल थे श्वेत क्रांति के जनक
अथक प्रयासों से दुग्ध उद्योग में आयी चमक
२२ अक्टूबर १९०३ का था ऐतिहासिक साल
जन्म लिए के.बी.पटेल का यह अनोखा लाल।

सहकारी दुग्ध उद्योग की रखी आधारशिला
सत्य प्रयासों से ही दूध का पाउडर मिला
वर्गीज कुरियन का रचनात्मक साथ लिया
कंडेस्ड दूध और पाउडर का प्लांट दिया।

देशबंधु प्रेस से की जीविका की शुरुआत
गाँधीवादी विचारधारा की करते थे वह बात
गाँधी और सरदार पटेल का सदा साथ दिया
स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

आज़ादी के खातिर कई बार गए कृष्णावास
दो बार राज्यसभा सदस्य बने त्रिभुवन दास
गुजरात राज्य में दुग्ध सहकारी संघ बनाया
आगे चल यही आनंद का अमूल कहलाया।

त्रिभुवन दास से मिली दुग्ध क्रांति को पहचान
अवदान के लिए मिला रेमन मैग्सेसे सम्मान
श्वेत क्रांति में रहा उनका अमूल्य योगदान
कृतज्ञ राष्ट्र से मिला उन्हें पद्मभूषण सम्मान।

दुग्ध उद्योग के प्रति सदा रहा विश्वास
श्वेत क्रांति के क्षेत्र में रच दिया इतिहास
तीन जून, १९९४ में हुआ उनका निधन
अमर रहेंगे सदा श्वेत क्रांति के त्रिभुवन।



८. लिटरेरी लेडी – वेल्थी हॉन्सिंगर फिशर

डॉ. शिखा कौशिक 'नूतन'

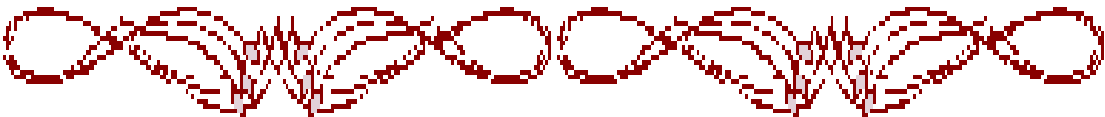
रोम, न्यूयार्क में जन्मीं, हॉन्सिंगर हाउस की वह नन्हीं बालिका,
हृदय में पवित्र बाइबिल, मस्तिष्क में शब्दकोश, आँखों में एटलस समाये,
वैश्विक स्तर पर महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक समानता का बीड़ा उठाये,
स्वतंत्रता, साक्षरता के लिए जीवन समर्पित कर,
बन गयी 'लिटरेरी लेडी'।

साक्षरता हाउस की छत, दीवार,
खिड़की, धरातल के साथ-साथ,
उनमें बसने वाली आत्मा थी, वेल्थी हॉन्सिंगर फिशर।
चीन, मेक्सिको, पेरू, बोलिविया, ब्राजील और भारत सहित,
मध्य पूर्व की शैक्षिक प्रणालियों की.

नदियों में नारी साक्षरता रूपी
नौका को तैराने का लक्ष्य लिए,
गाँधी जी के सपनों को आकार देती,
रंग भरती,
शिक्षा संग व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर
गरीबी को दी वज्र चुनौती
वेल्थी हॉन्सिंगर फिशर।

परम्परागत समाज की रूढ़ियों के अंधड़ से टकराव
चीन हो या भारत,
आधुनिक नारी रूपी इमारतों का नक्शा
तैयार करने वाली आर्किटेक्ट थी लिटरेरी लेडी
वेल्थी हॉन्सिंगर फिशर।

विश्व रूपी दीपक की साक्षरता रूपी प्रज्वलित
ऐसी दिव्य ज्योति है
वेल्थी हॉन्सिंगर फिशर
जिसके स्पर्श मात्र से
प्रज्वलित हो उठी असंख्य ज्योतियाँ।
और यह क्रम नहीं रुकेगा कभी।



९. सर्वोदय समाजवादी - जय प्रकाश नारायण

डॉ. नीता बोरा शर्मा

विजय ज्योति नाम अर्थ, वह स्वतंत्रता सेनानी थे
धैर्य, साहस, त्याग, बलिदानों की वे कहानी थे।
शोभित गाँव दियारा न्यारा, बलिया बिहार का,
हरसूदयाल-फूलरानी गेह पुत्र रत्न ने जन्म लिया।

भगवद्गीता संग गाँधीवाद का प्रभाव बहुत था,
त्याग, तपस्या का जीवन का भाव बहुत था।
विदेश में शिक्षा, पर राष्ट्र का उन्माद बहुत था,
सम्पूर्ण क्रांति लाने संस्कारों में चाव बहुत था।

लाने सकल क्रांति अग्रदूत का पद पाया,
कमज़ोर वर्ग नेता का परचम फहराया।
कृषक, कामगारों के विकास का भाव था,
मानों जीवन का यही सहज आधार था।

जनतंत्र का समर्थन, भ्रष्टाचार के विरुद्ध था,
समाजवादी विचारधारा अन्त्योदय रूप दिया।
युवा जाग्रति का प्रयत्न जीवन लक्ष्य था,
नैतिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक क्रांति स्तम्भ था।

करो या मरो के भाव ही थे बस मन बसे,
सर्वोदय-समाजवादी लोकनायक बन उभरे।
बुराईयों का अंत करना क्रांति का मंत्र था,
१९४२ की क्रांति के अग्रणी नायक बने।।

जननेता बन विश्व पटल पर जयप्रकाश छाया,
रेमन मैग्सेसे का अधिकारी बन सम्मान पाया।
मान बढ़ा भारत भू का आलोकित भाल किया,
स्वनाम धन्य जय, सबका पथ प्रशस्त किया।।



१०. नारी आत्म-निर्भरता का मंत्र : डॉ. कमला देवी चट्टोपाध्याय

डॉ. स्नेह ठाकुर

नारी शक्ति की परिचायक कमला देवी चट्टोपाध्याय
उनकी मेधा के समक्ष हुआ, उनका हरेक लक्ष्य साध्य
भारत व लंदन में शिक्षा पा, बन गई गाँधी की अनुयायी
चलीं काँधे से काँधा मिला, कारागृह की सजा भी पायी।

स्वतंत्रता सेनानी वह, पहली महिला चुनाव लड़ीं
लोकतंत्र की पक्षधर थीं वह, जनता के लिए रहीं खड़ी।
संस्थाओं की थीं वह जननी, हथकरघा का उद्धार किया
जन-जन उनको प्यारा था, सबको उसने प्यार दिया।

सहकारी आंदोलन चला, महिलाओं का उत्थान किया
लघु उद्योग प्रोत्साहित कर, कितने हाथों को काम दिया।
बनीं सम्बल वह निर्बल जन की, समाज सुधार का बीड़ा उठाया
कला, शिल्प, हथकरघा प्रशिक्षण, आत्म-निर्भरता का जज़्बा जगाया।

भारत सहकारी संघ बना, हर बाधा को पार किया
हथकरघा माँ कहते थे सब, सबने उन्हें दुलार दिया।
अभिनय कला की देवी वह, राष्ट्रीय थियेटर संस्थान बनाया
नाटक, संगीत, अकादमी का, स्वप्न भी साकार कराया।

सृजन में वह सक्रिय रहीं, अनेक पुस्तकें रच डाली
लोकप्रिय हुई वह जग में, प्रसिद्धि की महक वाली।
राष्ट्र ने किया सम्मानित, एक नहीं, दो बार किया
पद्म भूषण, पद्म विभूषण, उनकी झोली में डाल दिया।
संगीत फेलोशिप मिली, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार लिया।

स्वतः नाम से कमला थीं वह, माँ सरस्वती की कृपा पात्री
बढ़ाया मान देश भारत का, ऐसी थीं वह आदर्श सुपुत्री।



११. सत्यजित राँय - एक प्रेरणा

डॉ. निशा केवलिया शर्मा

भारत धरा पर कुसमित हुआ कला जगत का तारा,
बांग्ला भाषा का वह प्यारा, कोलकाता का दुलारा,
महकाया कुसुम बन सुकुमार राय-सुप्रभा के आँगन,
कला का वरदान सत्यजित ने विरासत में ही पाया।

ललित कलाओं का चितेरा वे हर दिल पर छाया,
'लाद्री दी बिसिक्लेत' फिल्म ने नया लक्ष्य दिखाया।
'पाथेर पांचाली' से विश्व-चित्रपट पर नाम कमाया
'अपराजितो' को वेनिस ने 'स्वर्ण सिंह' से सजाया।

ललित कला के कई रूप में बहाई धाराएँ धाराप्रवाह
लिख कर पटकथाएँ यथार्थ सिनेमा को दी नई दिशा
गीत लिखे, पार्श्व संगीत दिया कला पक्ष साकार किया
फिल्मों की प्रचार सामग्री को उसने ही आकार दिया।

न हुआ कोई न होगा कोई, जैसे वे फिल्म निर्देशक थे
अपनी हर फिल्म के लिए वह बन जाते पर्यवेक्षक थे
उनके अथक प्रयासों ने विश्व में उन्हें प्रख्यात किया
पितामह वे बने सिनेमा के, भारत को विख्यात किया।

था माँ शारदा का वरद हस्त, वे साहित्यकार संस्कारी बने
पुस्तकों के मुखपृष्ठ रचयिता, अपनी पुस्तकों के चित्र जने
बालकथा अद्भुत चितेरे, बाल पत्रिका की की शुरूआत
बांग्ला बाल साहित्य में भी, लोकप्रिय किये दो किरदार।

'अंडर वेस्टर्न आइज़' से सांस्कृतिक वैभव निखार दिया
'राँय रोमन', 'राँय बिज़ार' फ्रॉन्ट नये का आविष्कार किया
मिले सभी पद्म पुरस्कार संग रेमन मैग्सेसे पुरस्कार मिला
मिला मानद आस्कर अवार्ड, भारत रत्न पुरस्कार मिला।



१२. हरित क्रांति के प्रणेता – डॉ. एम. एस. स्वामीनाथन

डॉ. अलका मोहन शर्मा

देश में सर्वत्र मचा था हाहाकार,
कृषि प्रधान देश जन भोजन को था लाचारा।
देश की अर्थव्यवस्था चरमराई थी,
स्थिति भयावह, जनता भुखमरी कगार पर आई थी।

जनसंख्या ज्यादा, उत्पादन कम,
सर्वत्र फैला था अन्न का अभाव।
कृषि के तौर तरीके पुराने थे,
कृषि उपकरण, बीजों के बाजार बनाने थे।

समय था विकट, ईश ही सहारा था,
स्वामीनाथन का अनुसंधान डूबते को किनारा था।
मैक्सिकन-गेहूँ संग पंजाब-गेहूँ का मिश्रण,
सहस्रों गुना पैदावार दे हुनर का किया प्रदर्शन

जेनेटिक बीज किसानों को भा गए,
हरित क्रांति जनक बन जग में छा गए।
लहराती फसलें शस्यश्यामला इठलाई,
किसानों में भरा जोश धरा मुस्कुराई।

हर खाद्यान्न संकट, हरित क्रांति का बिगुल बजा दिया,
कृषि क्षेत्र में भारत को आत्मनिर्भर बना निर्भर दिया।
ज्ञान व दूरदर्शिता का परचम लहरा दिया,
नहीं झुकेगा देश, विश्व को ये बता दिया।

रेमन मैग्सेसे संग पुरस्कारों की हुई बौछार,
देश विदेश में लोग उनको सुनने को थे बेकरार।
युगों तक स्वर्णाक्षर अंकित, स्वामीनाथन का नाम,
हरित क्रांति के प्रणेता हे युगपुरुष! तुम्हें कोटि-कोटि प्रणाम।



१३. आठवाँ स्वर बन छाया लक्ष्मी : एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी

डॉ. दीपा पालक्किल कालियत

शर्मीली-सी, सुरीली सुब्बुलक्ष्मी,
केरल में जन्मी मानो सुरलक्ष्मी।
मातृभाषा कन्नड़ उनकी थी किंतु,
भाषा विविध में खूब पकड़ परंतु।

"महामहम उत्सव" बाल स्वर लहरे,
झंकृत जन-मन ज्यों वीणा स्वर सरसे।
डिस्क रिकॉर्ड से चर्चित बढी चमक,
कर्णाटक-भारतीय संगीत में धमक।

फिर अभिनय में धाक जमाई,
कभी मीराबाई बन भजन गाई।
'सेवा सदनम', 'सावित्री' में आई,
संयुक्त राष्ट्र संघ में धूम मचाई।

लता की वाणी में वह 'तपस्विनी,'
गुलाम अली बोले 'सुस्वर लक्ष्मी'।
आमोनकर ने कहा 'आठवाँ सुर',
सातों स्वर से ऊँचा आठवाँ सुर।

पद्म भूषण और पद्म विभूषण,
मिला रेमन मैग्सेसे और 'भारत रत्न'।
संगीत कलानिधि, कालीदास सम्मान,
दिया संगीत को जन-जन ने सम्मान।

जन्मशती का जब अवसर आया,
संयुक्त राष्ट्र संघ ने भी उसे मनाया।
डाक टिकट जारी कर तुम पर,
कृतज्ञ विश्व ने अपनापन बरसाया।



१४. पत्रकारिता के आदर्श : बी.जी. वर्गीज़

डॉ. शकुंतला कालरा

बर्मा की धरा पर फूल खिला, सुगंध क्षितिज के आर-पार
शिक्षा ली आ भारत में फिर, लेते जहाँ ईश अवतार
दून स्कूल के गौरव थे वे, सेंट स्टीफन की शान
पत्रकारिता के शिखर पुरुष, बने भारत का अभिमान।

टाइम्स ऑफ इंडिया से हुई, पत्रकारिता की शुरुआत
लिया प्रशिक्षण लंदन टाइम्स से, भारत लौटे तत्पश्चात्
नहीं देखे वर्गीज़ ने केवल, देश के अग्रणी अखबार
प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी के, वे थे सूचना सलाहकार।

जोड़-तोड़ की राजशक्तियाँ, लाई थीं संकट आपात
सम्पादन से किया निलम्बित, राजनीति का झंझावात।
बिकते पद, बिकती निष्ठाएँ, बी. जी. वर्गीज बिके नहीं
पूँजीपति या सत्ताधारी, किसी के आगे झुके नहीं।

अभिव्यक्ति-स्वातंत्र्य छीन जो, करते ज्ञान-प्रगति अवरुद्ध
सच्चे योद्धा की भाँति वे, खड़े हुए उनके विरुद्ध।
पत्रकारिता नहीं रिपोर्टिंग, जनसेवा का विमल द्वार
कठिन साधना है सत्य पथ की, पत्रकार यह करें विचार।

पत्रकारिता नहीं व्यवसाय, एक बड़ा दायित्व निभाना
तथ्य सहित विश्लेषित कर के, सत्य सभी को बतलाना।
दोषपूर्ण कृषि नीति से, न केवल किसान बेज़ार
दुष्प्रभाव से कहाँ बच पाये, शहर, उद्योग 'औ' बाज़ार।

चरमराती अर्थव्यवस्था इससे, होना चाहिए शीघ्र सुधार
खुशहाल गाँव, खुश हों किसान, विकास का जो मूल आधार
आत्मकथा लिखी पत्रकार ने, वह थी लेखक की जुबानी
लोकतंत्र के क्षरण की चर्चा, थी उसकी प्रमुख कहानी।

अद्भुत साहित्य सृजन कला में, मिला प्रतिभा को उपहार
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से, हुआ सम्मानित पत्रकार।



१५. अंतर्राष्ट्रीय समझ से परिपूर्ण व्यक्तित्व के धनी : हेनिंग होल्क-लार्सन

अश्विन गोयल

देवभूमि यह रिश्तों का मान बताती है,
कर्म संग सम्बंधों को भी अपनाती है।
सब पर अपना-सा मान नेह लुटाती है,
वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव सिखाती है।

डेनमार्क सपूत हेनिंग होल्क हार्सन,
आया भारत केमिकल इंजीनियर बन।
कार्य किया स्मिथ एण्ड कम्पनी संग,
अर्जित की पहचान कर्मयोगी बन।

खतरों से खेलना जिसका शौक रहा,
साहस से भरा उनका व्यक्तित्व रहा।
किया करार साथी संग साँझेदारी का
"लार्सन एण्ड कम्पनी" आकार लिया।

जर्मन आक्रमण से तनिक न घबराया,
स्वदेशी उपकरण बनाने का बीड़ा उठाया।
आवश्यकता पड़ी जब अतिरिक्त पूँजी की,
स्थापना कर दी "लार्सन एण्ड टुब्रो" की।

सोने की चिड़िया "दत्तक मातृभूमि" बनाया,
बुद्धि-तीक्ष्णता संग साहसी बनना सिखाया।
स्वप्न देखने पर होते हैं पूर्ण, सबको बतलाया,
संयम और साहस से सम्भव कर दिखलाया।

अंतर्राष्ट्रीय समझ-बूझ से व्यापार फैलाया,
"समूची धरती का हूँ", सच कर दिखलाया।
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से जग में सम्मान मिला,
भारतीय डाक टिकट पर अंकन उपहार मिला।



१६. रंगमंच का क्रांतिवीर : शम्भु मित्रा

प्रीति राघव

रंगमंच का क्रांतिवीर
इष्टा का वह चेहरा गम्भीर
बहोरूपी थियेटर गुप बना
उतरा बन जन का शूरवीर।

शम्भू था नाम धराया
रंगमंच से जुड़े शुरू से
पारंगत हुए अभिनय में
हर विधा में नाम कमाया।

रंगमहल थियेटर में आए
बंगाली थियेटर में छाए
मिनर्वा, निकेतन, श्रीरंगम
इष्टा से पहचान बनाए।

लेखन निर्देशन अति कुशल
भाव संप्रेषण अति सबल
उच्च कोटि के सृजन हार
निर्देशन में भी रहे सफल।

बन नूतन राह के राही
चलाया नया आंदोलन
गुप थियेटर का नाम धरा
बोहरूपी थियेटर बनाया।

दस चक्र हो या अध्याय चार
पगला घोड़ा दौड़ा अपार
खामोश अदालत जारी है
रचे विविध रूप निर्विकार।

उलुखगरा का किया लेखन
पुतुल खेला, दशाचक्र, ओडिपस
बांग्ला में किया रूपांतरण
सबका किया सफल मंचन।

धरती के लाल, जागते रहो
कई फिल्मों को भी फिल्माया
नाना भूमिकाएँ निभा कर
प्रतिभा से नए मुकाम बनाए।

था मजलूमों का संरक्षक
आशा-विश्वास का आरक्षक
नवान्न से नव निर्माण किया
बनकर किसान का पथ रक्षक।

रंगमंच की अप्रतिम धरोवर
अनुपम करिश्माई व्यक्तित्व
भारत धरा का अंशु उदित
सबका किया सफल मंचन।

रेमन मैग्सेसे से हुए विभूषित
संगीत नाटक अकादमी ने
सर्वोच्च सम्मान दी फेलोशिप
कालिदास सम्मान मिला मुदित।

बंग फीचर फिल्में की निर्मित
मिला सर्टिफिकेट आफ मेरिट
राष्ट्र ने मान दिया सम्मान दिया
सस्त्रेह पद्म भूषण सम्मान दिया।



१७. अनन्य नेतृत्व क्षमता की मिसाल : इला रमेश भट्ट

डॉ. जय भगवान शर्मा

अहमदाबाद में जनमीं इला सन् तैतीस में,
हे नारी सशक्तिकरण की अद्भुत मिसाल।
रोजगार दिलाने हित निर्धन महिलाओं को,
किया संचालित "सेवा" नामक संघ विशाल।

सुमंत भट्ट-वन लीला व्यास की लाइली,
मिले विरासत में मानव मूल्यों के संस्कार।
करके सुसमृद्ध आजीविका कार्य कौशल में,
श्रमजीवी महिलाओं को दिलवाए अधिकार।

कहलाई गाँधी विचारधारा की महिला,
समुन्नत किया गरीब महिलाओं का जीवन।
कर जागृत असंगठित ज़रूरत मन्दों को,
लगाई आत्मानिर्भरता-पट में सीवन।

किया संग्रहण तालों में बरसाती जल का,
हुआ कृषि समिति वनलक्ष्मी का आगमन।
सहायक बनी सेवा समिति भूमिहीनों की,
किया संगठन व्यवस्था में सटीक परिवर्तन।

छा गई इला सभी के संतुप्त हृदयों पर,
मिला उन्नत जीवन, सम्पूर्ण रोजगार से।
दिया अनुपम योगदान उत्थान-विकास में,
जोड़ गरीब महिलाओं को स्वरोजगार से।

योगदान दिया महिला हित योजनाओं में,
मिले पद्मश्री, पद्मभूषण उच्च अलंकार।
अपनी अनन्य नेतृत्व क्षमता के बल पर,
पाया इला भट्ट ने रेमन मैग्सेसे पुरस्कार।



१८. माबेले तू कल्याणी है : माबेले एरोल....

डॉ. पूनम भाटिया

माबेले तू कल्याणी है, जन-जन का कल्याण किया।
 स्व से उठकर जन की सोची और लक्ष्य संधान किया।
 सुख-सुविधाओं को त्यागा, रण का आह्वान किया।
 बीमारों और गरीबों, स्त्रीधन को संज्ञान में लेकर
 माबेले! तू कल्याणी है, जन-जन का कल्याण किया।
 एक चिकित्सक रहकर भी, जन-सेवा पर ध्यान दिया।
 उपचारों की पेटी लेकर गाँव-गाँव अभियान किया।
 यद्यपि महल-दुमहले तुम भी खड़े कर सकती थीं,
 मूल समस्याओं को पर, तुमने न नज़र अंदाज़ किया।
 इम्मनुअल से बनी एरोले और ध्येय इक साध लिया।
 माबेले और राज ने जीवन भर जन-कल्याण किया।
 नहीं असम्भव पर था मुश्किल, पाना अंजानों का साथ,
 ग्रामीणों का, महिलाओं का जीत मगर विश्वास लिया।
 साथ राज का मिला तुम्हें, नहीं तनिक विश्राम किया।
 जैसे-जैसे बढ़ी ज़रूरत, उतना अधिक इंतज़ाम किया।
 मोबाइल हॉस्पिटल किया आरम्भ, दवा मरीज़ों तक पहुँचे,
 सब सुविधाओं से लैस हॉस्पिटल 'जूलिया' का निर्माण किया।
 'व्यापक ग्रामीण स्वास्थ्य परियोजना' का तुमने निर्माण किया।
 फलदार वृक्ष हुआ वह समय से, सबने ही रसपान किया।
 नवजात-मृत्यु दर अल्प हुई, परिवार नियोजन हुआ स-शक्त,
 'पूर्ण सामुदायिक भागीदारी' से कुपोषण निष्प्राण किया।
 विश्वास, धैर्य और सूझ-बूझ से माबेले ने काम किया।
 विद्वतजन ने मदर टेरेसा-आम्बेडकर-मैग्सेसे सम्मान दिया।
 'जामखेड़, महाराष्ट्र का मॉडल' बना प्रेरणा जग में
 एरोले से मिली विरासत का जग ने विस्तार किया।
 माबेले तू कल्याणी है, जन-जन का कल्याण किया।



१९. सार्थक चेतना की मशाल : डॉ. रजनीकान्त शंकरराव अरोल

डॉ कैलाशचंद्र शर्मा 'शंकी'

हुए उत्पन्न सन चौंतीस को रजनीकान्त।
गाँव सूपा अहमदनगर जिला महाराष्ट्र प्रान्त॥
पिता शंकर मात लीलावती खुश थे पा दूजी संतान।
शिशु मुखमण्डल शशि-सा भाव थे निश्छल शांत॥

शिक्षक माता-पिता का पुत्र बना अनमोल।
रखा पूरा नाम रजनीकांत शंकर राव अरोल॥
व्रत लिया समाज सेवा का कर्म किए अनेक।
सेवा भाव की सुगन्ध बिखेर पुष्प बने बेमोल॥

करके आत्मसात् नैतिक औ' आध्यात्मिक मूल्य।
मिला पिता से गुणवत्ता का सही मार्गदर्शन॥
भाव विचार और व्यवहार में सामंजस्य कर।
पाया सफलता का ही पावन जीवन दर्शन॥

चिकित्सा ज्ञान मानव सेवा को किया अर्पित।
पुण्य कर्म धर्म को किया पूरा जीवन समर्पित॥
ऐसे सेवक समाज उत्थान के होते विरले।
रजनीकांत ने तन-मन-धन सब किया समर्पित॥

सामाजिक कुरीतियों को सुधारने का किया प्रयास।
सबको समान अधिकार दिलाने में था विश्वास॥
आई अनेक बाधाएँ तो संयम साहस खोया नहीं।
मिटाया जन-जन के दिल से विकृतियों का संत्रास॥

मिला अरोल को जीवन में मैगसेसे पुरस्कार।
पद्मभूषण से किया सम्मानित भारत सरकार॥
मिला समाज सेवा का, अच्छा ही प्रतिफल।
हुआ जीवन में संबर्द्धन मिटे सकल विकार॥



२०. रचनात्मक संचार कला के प्रतीक - गौर किशोर घोष

अंकिता गोयल

बदला नहीं चाहिए, बदलाव लाने के लिए,
एक दस्तक ही बहुत है, जगाने के लिए॥
शब्द तीर से गहरे होते हैं, चुभाने के लिए,
जन-मन के भाव शासक तक पहुँचाने के लिए॥

घोष दम्पति का लाड़ला गौर किशोर,
जन्मा था पूर्वी बंगाल में जून की भोर।
इंटरमीडिएट बाद बाधा अर्थ की घोर,
बढ़े प्रूफ रीडर से सम्पादक पद की ओर॥

"देश" और "आनंद बाजार" से मिला नाम,
मिला गौर को वरिष्ठ संपादक का काम।
नक्सली आंदोलन, पीड़ित पश्चिमी बंगाल धाम,
तीखे व्यंग्य लिखी - "रूपदर्शी" में टिप्पणी तमाम॥

आपातकाल के पश्चात् मुण्डन करवाया,
लिखा पुत्र को - लेखन स्वतंत्रता का शोक मनाया।
गिरफ्तारी ने "आनन्द बाजार" वरिष्ठ सम्पादक बनाया,
किया "आजकल" प्रारम्भ, लेखनी ने विस्तार पाया॥

साप्ताहिक व्यंग्य स्तम्भ, हास्य कहानियों की शृंखला,
संग लघुकथा संग्रह आठ, यही थी संयमी जीवन की अर्गला॥
मानवीय दृष्टि, निर्भीकता, थी अडिग पत्रकारिता का आधार,
कट्टरपंथी मानवता संग, गाँधी आदर्शों का सार॥

प्रेस की अभिव्यक्ति स्वतंत्रता के तीखे तेवर दिखलाए,
रचनात्मक संचार कला, प्रतीक बन छाए।
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से आप सम्मान पाए,
अभिव्यक्ति अधिकार जन की शक्ति बन आए॥



२१. पद्मविभूषण डॉ. प्रमोद करण सेठी

प्रो. मंगला रानी

वाराणसि तू धन्य-धन्य, पाया कबीर तुलसी महान,
हे तपः भूमि, हे ज्ञान-केन्द्र, शत बार नमन हे मुक्ति धाम.
प्रमुदित प्रमोद के नव-दर्शन, नव-नव प्रकाश से परिपूरित,
फिर धन्य धरा उमगित सरसित, शिव के त्रिशूल पर अवलम्बित.

विद्या विवेक सब अर्थहीन, यदि प्राण प्राण से विलग रहें,
है जन्म लिया प्रिय मनुज रूप, तो मानवता हित काम करें.
ऐसा ही नेक चिकित्सक था, वह पढ़ता था कुछ गुनता था,
करुणा का करुण प्रदीप लिये वह अंधकार में चलता था.

पढ़ना, लिखना, चिंतन, मंथन से आगे भी कुछ करता था,
"सुंदर हो दुनिया, सब सुंदर, वह सुंदर जीवन रचता था.
निकल आगरा की धरती से, पहुँचा लंदन सपन सजाये,
एफ आर सी एस की डिग्री ले, लौटा दृढ़ सेवा का प्रण ले.

सात विषय में डिस्टिंक्शन से, पास हुआ वह विज्ञानी,
भारत लंदन से महाज्ञान, पाने वाला जीवन दानी.
सवाई मानसिंह अस्पताल में रामचंद्र नव साथी संग,
रच डाला इतिहास नया, भर डाली दुनिया में उमंग.

एक पाँव ऐसा हो, जो नव आशा का संचार करे,
दुःखी उदास हताश जीवन को, हरा-भरा खुशहाल करे.
सोचा करते सब सक्षम हों, आत्म-विकास दमकता हो,
पाँव अगर लंगड़ा भी हो तो, वह पहाड़ पर चढ़ता हो.

जयपुर की धरती पर उसने, नये पाँव की रचना की,
दीन-हीन लाचार विवश के, जीवन को नव आशा दी.
पूरी दुनिया को चकित किया, "जयपुरिया फुट" की नींव रखी,
मानवता की मिसाल बनकर चमका, भारत की आन रखी.

प्रमोद करण सेठी तुमको करते हम सब शत-शत प्रणाम,
स्वयं विभूषित पद्मश्री, रेमन मैगसेसे हर्षित ललाम.
काम किया बस काम किया, प्रेरणा पुंज तुम विश्व-भाल,
सूरज निकला जो पूरब से, द्यावा अम्बर को कर निहाल.



२२. पर्यावरणविद् चंडीप्रसाद भट्ट

डॉ. पुष्पा जोशी

तरु जब-जब कटता था, तिल-तिल बँटता था,
फल-फूल, मकरंद-गंध, शाखाएँ करती क्रंदन, पत्रों में होता स्पंदन,
काटो इसे काटो, बर्बर मानव यही रटता था,
दिन-प्रतिदिन देख तरुच्छेदन,
चंडी जी का हृदय फटता था, प्रकृति पर जा अटता था।

वो सरिता जो कल-कल बहती जाती थी,
जल नहीं अब वो अश्रु बहाती थी,
उच्छिष्ट, अवशिष्ट से तेरे रे मानव! अपवित्र हुई जाती थी,
देव-अर्घ्य हो या अतृप्त, मलिन जल-पान कराती थी,
दिन-प्रतिदिन जल स्तर उसका घटता था, देख यही,
चंडी जी का हृदय फटता था, प्रकृति पर जा अटता था

तपस्वी सा वो गिरि भी दरकता था,
गर्भ में बारूद जब उसके सरकता था,
खण्ड-खण्ड बिखरता था, तब न किसी पर बिफरता था,
पथ में बँटता था, पगों से जा सटता था,
गरजता था 'जलजला आएगा, धरा दहलाएगा'
दिन-प्रतिदिन सुन उसका गर्जन-तर्जन,
चंडी जी का हृदय फटता था, प्रकृति पर जा अटता था।

देख दुर्दशा पर्यावरण की, चंडी जी ने चंडी रूप धरा
बन प्रकृति मित्र जग में, फूलों का इत्र भरा,
'दशोली ग्राम स्वराज संघ' स्थापित मातृशक्ति आधान किया,
पर्यावरण प्रति संवेदनशील-सहोदर सा व्यवहार किया,
सुफल हुए सुकाज, पर्यावरणविद् कहलाए,
पा सम्मान मैगसैसे, विश्व-पटल पर तिरंगा फहराए।



२३. ग्राम्य विकास के लिए कटिबद्ध मनीभाई देसाई

डॉ. रामचंद्र स्वामी

माँ रमीबहन, पिता भीमभाई किसान के घर एक देशप्रेमी पधारे
सताईस अप्रैल उन्नीस सौ बीस को ये कोस्मादा, गुजरात अवतारे।

पढ़ा-लिखा कर माँ ने अपने लाल को विद्वान बनाया।
देश-सेवा का जज्बा रमीबहन ने बचपन में ही जगाया।
सुख-सुविधा का जीवन त्याग स्वदेश प्रेम को अपनाया।
आजीवन निर्धनों की सेवा में अपना तन-मन-धन लगाया।

दृढ़ संकल्प हो कर्मक्षेत्र में कर्मठता का प्रभाव दिखलाया।
शहरी शिक्षा का प्रभाव छोड़ ग्रामीण परिवेश को अपनाया।
रमीबहन देसाई का लाल शुरू से ही सेवा का दिवाना था।
देश सेवा, मानव प्रेम का लोहा बापू गाँधी ने भी माना था।।

इंजीनियर छोड़, ग्रामीणों में विकास की अलख जगाई थी।
निर्धन गाँव वालों को आर्थिक विकास की राह बताई थी।।
गाँधी जी संग देश आजादी का आंदोलन चलाया था ।
मातृभूमि के प्रेम की खातिर जनसेवा को अपनाया था।।

उरली ग्राम उत्थान-विकास में सारा जीवन समर्पित किया।
प्रकृति उपचार और बागवानी हित सर्वस्व अर्पित किया।।
मानव सेवा के साथ पशु चिकित्सा को भी अपनाया।
आधुनिक उपचार तरीके से पशुओं को रोगमुक्त करवाया।।

देश भक्ति का जज्बा उसने दांडी मार्च में दिखलाया था।
घर-घर नमक पहुँचा कर मनीभाई ने फर्ज निभाया था।।
देश सेवा के लिए सरकार से पद्मश्री सम्मान पाया।
लोकसेवा के लिए "रेमन मैग्सेसे" अपने नाम कराया।।

गाँधीवाद सामुदायिक मूल्यों का सादा जीवन अपनाया।
कैसे जीते हैं देश की खातिर मिसाल बन कर दिखलाया।



२४. विश्व प्रेस स्वतंत्रता नायक - अरुण शौरी

मधु रानी

शौरी की कर्मठता गूँजी
संसद की दीवारों में,
अरुण का प्रकाश फैला
जनता के गलियारों में।

पत्रकार, लेखक, नेता, बुद्धिजीवी,
बनी जनादेश में इनकी थाती।
सूचना प्रौद्योगिकी या योजना आयोग,
सदा फैली नाम की बाती।

स्पष्ट वाणी इनकी पहचान,
राजनीति में इनकी शान।
विश्व प्रेस स्वतंत्रता नायक
न्याय-पताका के तुम वाहक।

इंडियन एक्सप्रेस में बन सम्पादक
खोजी पत्रकारिता को अपनाया
भ्रष्टाचार, अन्याय, असमानता
सबकी असलियत को दिखलाया।

वर्ल्ड बैंक खूब सम्हाला,
ये अर्थशास्त्री कहलाते हैं।
लोकनीति के हो आराधक,
राष्ट्रवाद के हो तुम साधक।

विश्वपटल पर कितने कीर्तिमान्,
स्थापित कर डाले महान्।
रेमन मैगसेसे मिला पुरस्कार,
दुनिया करती इनको सलाम।



“कॉमन मैन” के हास्य-व्यंग्य चितरे - कार्टूनकार रासीपुरम कृष्णराव लक्ष्मण

अरुण कुमार कुलश्रेष्ठ

शुचि देवभूमि भारत प्रांगण में,
अवतरित विभूतियाँ प्रायः विलक्षण,
बुद्धि-विवेकमय सिद्ध अप्रतिम,
यथा रासीपुरम कृष्णस्वामी लक्ष्मण।

सांस्कृतिक राजधानी कर्नाटक की,
मैसूर-धरा का धवल सितारा,
हास्य-व्यंग्य हृद चारु गहनतम,
भरता "गागर में सागर" न्यारा।

व्यंग्य-चित्र का कुशल चितेरा,
सुविख्यात भारतीय कार्टूनकार,
"कॉमन मैन", सामाजिक विकृतियाँ,
राजनीतिक वैदूष्य पर तीखी धारा।

कार्टून-शृंखला "यू सैड इट" के लिए,
निखिल विश्व के पट बौद्धिक पर,
स्थान विशिष्ट मेधावी व्यक्तित्व,
प्रख्यात विशेष आर.के. लक्ष्मण।

बी. डी. गोयनका पुरस्कार और
सम्मानित स्वर्ण-पदक दुर्गा रतन
पद्मश्री, पद्मविभूषण, रेमन मैग्सेसे,
जैसे पुरस्कारों से सम्मानित चरित्र।

कैसे विस्मृत कर पायेगा अवनितल,
महाविभूति कार्टूनकार अतुल्य को,
इतिहास पृष्ठ अंकित स्वर्णाक्षर साक्षी,
धरा सितारे! युगो-युगो तक संरक्षित।



२६. मानवता के पुजारी मुरलीधर देवीदास आमटे

पुष्पा सिन्हा

टेरेसा और गाँधी की कड़ी में नाम जुड़ा,
परहित सेवा को अपना तुमने कर्म चुना,
मानवता हित कुष्ठ रोगियों को मान दिया,
बाबा की पदवी से जग ने सम्मान दिया।

मुरलीधर नाम, देवीदास - लक्ष्मी के जाए,
देश-दुनिया को कृतार्थ करने तुम आए,
सदय हृदय तुमने जन-मन सहलाए,
युग पुरुष बन भारत भू पर तुम आए।

छोड़ी वकालत, सुख सुविधाओं को त्याग,
देश हित सुखदेव – गाँधी का दिया साथ,
अहिंसा, विनोबा का मार्ग, देश दर्शन किया,
सिसकती मानवता के उपचार का प्रण लिया।

कुष्ठ रोगियों के हित मार्ग जो अपनाया,
"आनन्द वन" आश्रम को खड़ा किया,
निःशुल्क उपचार संग सेवा-व्रत रंग लाया,
'श्रम ही है श्रीराम हमारा' सिखलाया।

खिल उठे कुष्ठ रोगियों के आनन ज्यों कमल,
तुमने भी तब समझा अपना जीवन सार्थक,
पर्यावरण हित भी तुमने निष्ठा दिखलायी,
जन हित अपनाओ, शिक्षा सिखलायी।

जन सेवा का आधार तुमने अपनाया,
जीवन सारा उसमें तुमने होम दिया।
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से सम्मान मिला,
मानवता को जग में तुमसे आधार मिला।



२७. अर्थशास्त्री – लक्ष्मीचंद जैन

डॉ. मनोरमा

अर्थ शास्त्र के पन्नों पर
बनाकर परिवर्तनकारी गुप
देकर एक नई दृष्टि
एक भविष्य दृष्टा की तरह
जूझते हुए विघटन से
विभाजित भारत।

स्वतंत्रता सेनानी माता पिता से
पाकर प्रेरणा
पाकर विचार
देकर उन्हें नया विस्तार
प्रतिपादित किया
मशीन-आधारित अर्थव्यवस्था की जगह
श्रम आधारित अर्थव्यवस्था
एक नया विचार
एक नया सिद्धांत
जो बन गया
भारत के विकास का मूल मंत्र
कैसा व्यावहारिक संतुलन किया तुमने
गाँधीवाद, नेहरूवाद और साम्यवाद में
जिसके सम्मान में दिया सरकार ने
तुम्हें पद्मविभूषण
और उसके साथ मिला
मैगसेसे पुरस्कार
धन्य हो तुम भारत माँ के लाल।



२८. कला पारखी के. वी. सुबन्ना

श्रीमती सरोज शर्मा

संस्कृति-सृजन के सुबन्ना, सुत वह एक महान थे
जन्में शिमोगा के एक गाँव, भारत माँ की शान थे
लोक कला, नाटक थियेटर, गाँव-गाँव जीवंत किये
अंधकार पर किया प्रहार, जलाये शिक्षा के दीये।

साहित्य था शिवत्व-सम, थियेटर में थे बसते प्राण
विज्ञान नहीं मात्र पाठ्यक्रम, ब्रह्मांड का है महत् वतायन
साहित्य, थियेटर और विज्ञान, उनका था जीवन दर्शन
रच कर तीनों का संगम, करना चाहते थे भारत निर्माण।

लोकतंत्र के पक्षधर थे वे, समाजवादी दर्शन अपनाया
न कोई छोटा न कोई बड़ा, जन-जन को यह समझाया
युवाओं को किया प्रशिक्षित, गाँव को कर्मस्थली बनाया
जोड़ा सबको नाट्य संस्कृति से, थियेटर को समृद्ध बनाया।

किया अथक परिश्रम बराबर, नीनसम को आगे बढ़ाया
विस्मृत संस्कृत नाटकों को, मंचित कर गाँवों में दिखाया
नीनसम नाट्य संस्थान बना, विश्व-स्तरीय मान दिलाया
लेखन था उच्च कोटि का, पुरस्कार साहित्य अकादमी पाया।

खोले नाट्य प्रशिक्षण केंद्र, कर्नाटक के गाँव शहर
देशी और विदेशी नाटक, कन्नड़ भाषा में हुए प्रखर
धनंजय का दशरूपम नाटक, कन्नड़ में अनुवाद किया
भरत का शाश्वत नाट्यशास्त्र, कन्नड़ में अपने नाम किया।

भाग्य इतराया उनके कर्म पर, उसे बहुत दुलार दिया
एशियाई विश्व संस्था ने, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार दिया
संगीत नाटक अकादमी ने पुरस्कार से सँवार दिया
कृतज्ञ राष्ट्र ने भी पद्मश्री उपाधि देकर प्यार दिया।



२९. २०वीं सदी के महान् संगीतज्ञ – रविशंकर

मोनिका गोयल

सुर-साधना जिसके जीवन का आधार था,
श्याम शंकर के आँगन का वह श्रृंगार था।
शिशु जन्मा, बनारस में मना त्यौहार था,
रविन्द्र शंकर नाम संगीत की धार था।

शास्त्रीय संगीत की उद्धोषणा का भान था,
भारतीय ज्ञान गौरव की उत्कृष्टता का मान था।
बालपन का खेल कर्मक्षेत्र का आधार था,
उदयशंकर की नृत्य मंडली, सितार का साथ था।

शिक्षा संग अभ्यास निरंतर, सितार पहचान बनी,
ऑल इंडिया रेडियो संगीत निदेशक आधार बनी।
देश-विदेश किया प्रदर्शन, बैंड बीटलन में गूँजी,
मनमोहक सुर लहरी जन मन का श्रृंगार सजी।

रागों को विस्तार दिया, नवीन राग सृजित किया,
प्रतिभा बल से मानद उपाधि को स्वीकार किया।
संसद सदस्य बने अलंकरण-बरखा स्नान किया,
संगीत कला को जीवन साधना का स्थान दिया।

शास्त्रीय संगीत गौरव गाथा झंडा जग में फहराया,
परम्परा की धार को जंग न लगने दो, सिखलाया।
संगीत में है अध्यात्म शांति का संदेश दोहराया,
त्रिलोगी, अनुराधा, मीरा, गाँधी को संगीत दिया।

सितार को आधार बना की थी तुमने स्वर-साधना,
रवि-सितार, सितार-रवि यही थी बस आराधना।
देकर रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, जग ने अपना माना,
सदी के महान संगीतज्ञ सबने तुमको पहचाना।



३०. परिवार नियोजन की अलख जगाने वाली - बानू जहाँगीर कोयाजी

पूनम कुमारी

भारत वर्ष में आज़ादी की, जब छिड़ी हुई लड़ाई थी,
जनसंख्या नियन्त्रण की, 'बानू' ने बिगुल बजाई थी।
अशिक्षित-ग्रामीण क्षेत्रों में, शिक्षा की ज्योति जलाई थी,
परिवार नियोजन मूल मंत्र, महिलाओं में अलख जगाई थी।

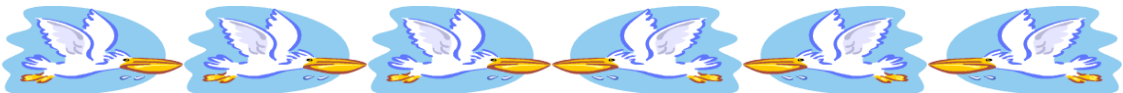
दूरदर्शी दृष्टि लेकर बानू तुम जग में अवतरित हुई,
परिवार नियोजन की युक्ति जन-जन में फलित हुई।
भावी सदियों की चीखों का, हो गया तुम्हें अनुमान था,
परिवार नियोजन का व्रत, जीवन का सही सम्मान था।

देश तभी होगा खुशहाल, होगा सीमित जब परिवार,
ऐसी शिक्षा का घर-घर में, 'बानू' ने दे दिया आकार।
गाँव-गाँव में बालाओं का, प्रशिक्षण मॉडल बनवाया,
समुदाय सहायता सूत्र, राष्ट्र में मान्य करवाया।

मॉडल बन छाया देश में, जन-जन में बना संस्कार,
सभी स्वास्थ्य संस्थानों ने बना लिया इसे आधार।
महिला स्वास्थ्य-विकास योजना का आरम्भ करवाना
उद्देश्य था युवतियों को पढ़ाना और कौशल सिखलाना।

परिवार नियोजन, बाल स्वास्थ्य को भी सम्भव बनाया,
जनसंख्या नियंत्रण क्रांति का देश ने कदम बढ़ाया।
समस्या की जड़ जनसंख्या को तुमने खूबी से सुलझाया,
परिवार नियोजन संस्कार बना जन-जन तक पहुँचाया।

सुख सुविधा की दुनिया छोड़, तूने संघर्षों को अपनाया था,
रेमन मैगसेसे पुरस्कार पा कर, तुम ने देश का मान बढ़ाया था
कृतज्ञ राष्ट्र ने पद्मभूषण से आभूषित किया तुमको,
भारत की बेटी बानू पर, खूब अपना स्नेह बरसाया था।



३१. जुनून, साहस, सेवा की मिसाल किरण बेदी

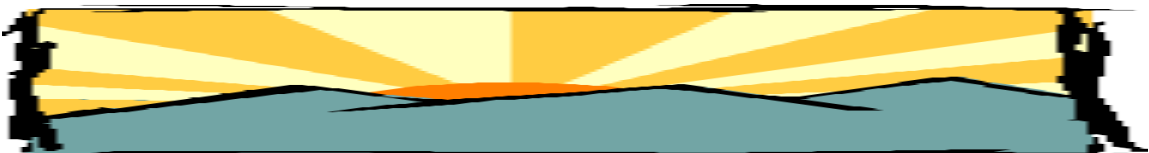
डॉ. कीर्ति गोयल

निर्भय, निर्भीक
हौसलों की उड़ान का जश्र है जो
कर्मठता जिसकी अनुकरणीय
कर्म लोकमंगल से जोड़े वो
बदलाव की बयार है,
अदम्य साहस का प्रतीक है जो
सेवा की मिसाल
बस एक बेमिसाल 'किरण' ही है वो।

वज्र सा कठोर व्यक्तित्व
पर वत्सला-सा संवेदनशील मन धरे जो
'पठानी' पहने शौर्य को परिभाषित करती
नजरें लक्ष्य पर साधे वो
कारावास के कलुषित गहन अँधेरों में
विपासना का मार्ग सुझा,
नए भविष्य के उजास की 'किरण' बनी वो।

तेज और सौम्यता का अनूठा सामंजस्य
निडर सिंह की दहाड़-सी है जो
असम्भव को परे धकेल
हर अवरोध पर अपना मार्ग बनाती
जुनून, साहस, सेवा की मिसाल है जो
'किरण' रूप में जगमगाती वो।

राष्ट्रहित का उद्देश्य लिए बढ़ती चले वो
यशस्वी सूर्य की आभा समेटे जो
कठिनाईयों के लिए खुद चुनौती है वो
सूर्य-सी किरण एक 'किरण' ही तो है वो।



३२. धर्म दर्शन, अध्यात्म पुरोधा - श्री पाण्डुरंग शास्त्री आठवले

डॉ. अर्चना प्रकाश

बैजनाथ अरु पार्वती सुत,
शास्त्री पाण्डुरंग थे अद्भुत,
धरा रोहा की हुई गर्वित,
जन्मदिन बना गौरव दिन।

स्वाध्याय का बिगुल बजाया,
वेद उपनिषद ज्ञान लुटाया,
गाँवो शहरों प्रवचन अनेक,
आत्मज्ञान का आंदोलन नेक।

पाण्डुरंग बने प्यारे दादा,
सेवा सत्कर्म स्नेही ज्यादा,
अच्छी सोच का फल अच्छा,
जीवन जीने का ढंग सच्चा।

प्रतिभा आणि प्रतिमा कार्य विशेष
दूरदर्शन पर दर्शक अशेष,
सर्वत्र गूँजती प्रशस्ति तुम्हारी,
संजीवनी देती वाणी माधुरी।

धर्म दर्शन, अध्यात्म पुरोधा,
पुरस्कारों के भव्य विजेता,
रेमन मैग्सेसे, पद्मविभूषण,
महात्मा गाँधी, टेम्पलटन पाया।

ऑग्ल प्राच्य साहित्य समन्यवक,
सेवा कर्म मानव धर्म रक्षक,
नमन-नमन शत नमन तुम्हें,
पवित्र भावांजलि अर्पित तुम्हें।



३३. जनतंत्र के प्रहरी – टी.एन. शेषन

डॉ. विदुषी भारद्वाज

जनतंत्र को सफल बनाना उद्देश्य रहा जिसका,
आया भारत भू पर टी. एन. शेषन नाम उसका।
जनता को जनतंत्र का अर्थ यूँ समझाया,
मानों पवनसुत को शक्ति स्मरण कराया।

प्रतिभा उपयोग ईमानदारी संग सिखलाया,
चुनाव व्यवस्था सुधार संकल्प अपनाया।
भ्रष्टाचार मिटाने का तुमने आह्वान किया,
आकर दिखलायी पद की गरिमा-महिमा।

मनीषा को गिरवी रखने को मना किया,
चुनाव में आचार संहिता को अपनाया।
परेशान अचम्भित कर दिया सत्ता को,
मतदाता को पहचान पत्र सम्मान दिया।

आचार संहिता को सख्ती से अपनाया,
उम्मीदवारों के अधिक खर्च को रुकवाया।
गिनती से पहले मत-पत्रों को गिनवाया,
पारदर्शिता को चुनाव में अपनाया।

जिलाधीश, सचिव, मुख्यसचिव, अनेक पाए पद,
पहुँचे देश के दसवें मुख्य चुनाव आयुक्त पद।
विरोध किया टिहरी, सरदार सरोवर बाँध का,
जनहित प्रश्न कोमल तरल सम्वेदन मन था।

जनतंत्र के प्रहरी तुम जन हित आकांक्षी,
नयनों में देश समृद्धि भाव था समाया।
सम्मान मिला 'रेमन मैग्सेसे पुरस्कार' संग,
इतिहास के पन्नों में यूँ नाम लिखाया।



३४. अनसुनी कहानियों की अभिव्यक्ति बनी महाश्वेता देवी

आशीष कुमार साव

भारत के ढाका में महाश्वेता का जन्म हुआ,
साहित्य की छाँव में व्यक्तित्व विकास हुआ,
आरम्भिक शिक्षा ढाका में हुई सम्पन्न,
उच्च शिक्षा के लिए चुना शांति निकेतन।

कलकत्ता विश्वविद्यालय व्याख्याता पद पाया,
पत्रकारिता-साहित्य सृजन तल्लीन हो अपनाया,
जीवन के हर मर्म को लेखनी से साकार किया,
साहित्य सेवा हेतु व्याख्याता का पद त्याग दिया।

"नाती" से साहित्य जगत् में प्रसिद्ध हुई,
'झाँसी की रानी' से कथाकार ख्यात हुई,
जन पीड़ा को लेखनी से साकार किया,
बांग्ला साहित्य कृतियों से अम्बार दिया।

'अरण्येर अधिकार' आदिवासियों की गाथा है,
नेता बिरसा मुंडा के जीवन की गाथा है,
'अग्निगर्भा' में अनसुनी कहानियों को बाँचा है,
जन-जन पीड़ा के कारणों का साँचा है।

'रुदाली' व 'हज़ार चौरासी की माँ' यूँ छा गई,
फ़िल्म रूप में दर्शकों के मन को भा गई,
जनजातिय हित ज़मीनी स्तर को अपनाया,
पुरस्कार-राशि को आदिवासियों हेतु दान दिया।

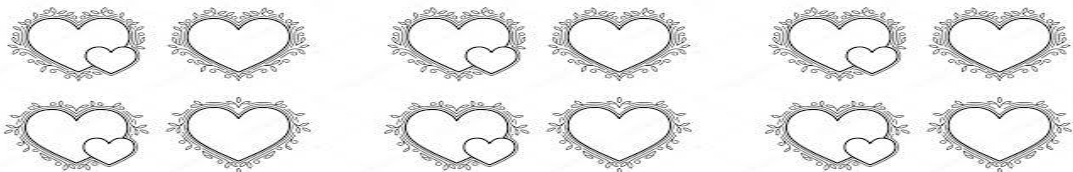
विलक्षण कार्यों ने जिस मुकाम तक पहुँचाया है,
रेमन मैग्सेसे, अकादमी, पद्मश्री, पद्मविभूषण ज्ञानपीठ दिलवाया है,
लेखनी के दम पर लोगों के दिलों में राज किया,
गूगल ने भी उनके सम्मान में गूगल डूडल बनाया।



३५. पर्यावरण के साधक - महेश चन्द्र मेहता

डॉ. राजेश बत्रा

पर्यावरण बचाना, देश को आगे बढ़ाना,
 फले फूले सारा संसार, यही मेहता जी का संदेश।
 कानून की करी पढ़ाई, प्रदूषण की जीती लड़ाई,
 सादा जीवन उच्च विचार, यही मेहता जी का संदेश।
 जीवन में कभी न डरना, बस कानून का पालन करना,
 मानवता ही हमारा परिवार, यही मेहता जी का संदेश।
 अव्यवस्था सारी मिटाओ, भ्रष्टाचार भूत भगाओ,
 हो दुष्टों का संहार, यही मेहता जी का संदेश।
 बेशक विज्ञान अपनाओ, पर दोहन मत करवाओ,
 बनो प्रकृति के पहरेदार, यही मेहता जी का संदेश।
 पेड़ पौधे खूब लगाओ, हवा पानी स्वच्छ बनाओ।
 समृद्धि की बहेगी बयार, यही मेहता जी का संदेश।
 गंदगी हो न कीट पतंगा, हो निर्मल पावनी गंगा,
 संस्कृति का हो उद्धार, यही मेहता जी का संदेश।
 कलम की ताकत पहचानो, देश हित में लड़ना ठानो,
 कलम ही सर्वश्रेष्ठ हथियार, यही मेहता जी का संदेश।
 हिंदी जानी पहचानी, हिंदी हैं हिंदुस्तानी,
 हिंदी से करना प्यार, यही मेहता जी का संदेश।
 जनहित में जीवन जीना, जनहित-सा धर्म कहीं न,
 करना सदा परोपकार, यही मेहता जी का संदेश।
 धरती माँ देती बहुत, लो उतना जितनी जरूरत,
 स्वस्थ पर्यावरण अधिकार, यही मेहता जी का संदेश।
 तपःपूत थी उनकी साधना, राष्ट्र के प्रति आराधना,
 करो देश से प्यार, यही मेहता जी का संदेश।



३६. मलिन बस्तियों का मसीहा - जॉकिन अर्पुथम

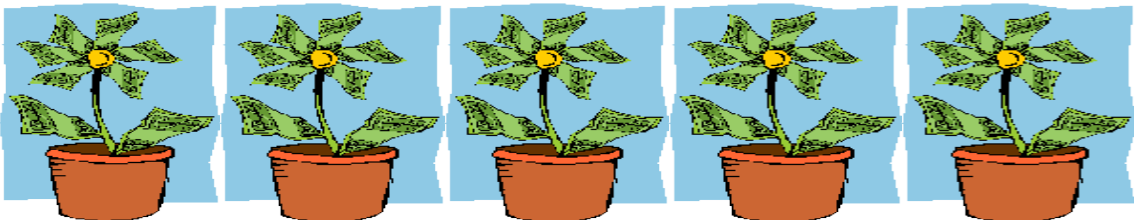
किरण चावला कपूर

पानी की लहरों पर चलते समय और खाली जेब ने
कोलार के स्वर्णिम मैदानों से लाकर खड़ा कर दिया जॉकिन को
बदबूदार मुम्बई की बस्तियों के हवाले,
नाक के साथ विभाग की गहराइयों को भी भींच रही थी दुर्गंध
और जॉकिन जा पहुँचा पहाड़ पर करने खुदकुशी
उसी क्षण नेतृत्वमय रक्त ने रच डाली योजना दुर्गंध के खून की।

नगर पालिका जो शहर भर का उठाती थी कूड़ा
नजरअंदाज किए बैठी थी मलिन बस्तियों को
तब जॉकिन ने आयोजन किया कूड़े का उत्सव
बस्तियों से निकले हज़ारों बच्चों ने मुस्कुराती आँखों और दुरुस्त हाथों से
भर दिया नगरपालिका के प्रांगण को कूड़े की सौगात से
बस अगले ही दिन से दौड़ने लगी कूड़े की गाड़ियाँ मलिन बस्तियों की ओर।

जॉकिन की बस्ती में शाम ढलते ही गलियों में टिमटिमाने लगे दीये
रात्रि-पाठशाला बना बड़े बच्चे गुरु और छोटे बच्चे शिष्य हो जाते
पास ही दीवार का सहारा लगाए जॉकिन
कर रहे होते अनुभव छूटी पढ़ाई के पूरी होने का, रोशनी की मिनारें बनाने का।

अब बस्तियाँ खुलकर माँगती बुनियादी सुविधाएँ
यहाँ औरतें सँजोती थी पैसे समूह में, तब बुनती सपने नहीं बल्कि हकीकतें
बस्ती के लोग जो दूसरे वर्गों को देते थे राजसी सुख
अब रहने लगे स्वाभिमान के साथ
रेमन मैग्सेसे मिलने के बाद भी जॉकिन रहे बस्ती में ताउम्र
कहते- घर को घर की इज्जत मिलनी चाहिए
भले वह झोपड़ी हो या ताजमहल।



३७. शक्ति की प्रतिमूर्ति - अरुणा राँय

महेंद्र मिश्रा

चेन्नई की धरा पर जन्मी
नारी शक्ति का प्रतिमान बनी ।
लक्ष्य केंद्रित हुई जीवन में
राष्ट्र का उत्थान बनी ।

शक्ति की प्रतिमूर्ति अरुणा
निर्धन हित अर्पित हुई ।
आईएएस के ठाठ ठुकराए
सेवा को समर्पित हुई ।

देव हूंगरी धाम बना तब
सेवा की शुरुआत हुई ।
शोषित पीड़ित मानवता के
हित चिंतन की बात हुई ।

धन्य हुई मेवाड़ धरा
मज़दूर किसान सब हर्षाये ।
अरुणा का सानिध्य मिला
तब संगठन के ध्वज फहराये ।

सूचना का अधिकार दिलाया
चर्चा चली भारत भर में ।
भ्रष्टाचार को लगी लगाम तब
खुशियाँ फैली घर-घर में ।

अरुणा की अरुणिमा उभरी
फैली देश देशांतर में ।
मैगसेसे से हुई पुरस्कृत
मिली तृप्ति उर अंतर में ।



३८. जलपुरुष राजेंद्र सिंह

किशोर सिंह चौहान

बागपत में जन्म लिया,
कर्मभूमि अलवर जिसकी
जल संरक्षण में गुजारी जिंदगी
पानी का महत्व समझाया
रही प्रकृति ही माँ जिसकी।

प्रेरित रहे जयप्रकाश नारायण से
आगाज किया तरुण भारत संघ से
जोहड़, तालाब जय, नदी बाँध
छोटा बड़ा नहीं होता कोई कर्म,
योगी-सा जिसका भाव रहा।

सैकड़ों गाँवों का कायाकल्प कर डाला
जमनालाल बजाज क्या रेमन मैग्सेसे अवॉर्ड
अपनी हिम्मत लगन से सभी पुरस्कार
भर-भर अपनी झोली में डाला।

दुनिया के उन पचास लोगों में था
नाम किया अपना गौरवान्वित
बचा सकने की सामर्थ्य क्षमता
इस प्रकृति एवं धरती माँ को।

अपना सर्वस्व त्याग दिया
अपने पद को छोड़ दिया
नहीं आप-सा सानी कोई
जो आपने महान काम किया।

सूखी नदियाँ थीं जो सालों से
सूखे खेत खलियान थे
निर्जन हो रही हमारी अरावली
भूखे बेहाल किसान थे।
पुनर्जीवित किया नदियों को
तालाब जोहड़ भी भर गए
हे जल पुरुष राजेन्द्र! तेरे पुरुषार्थ से
कितने लोग तर गए।



३९. एक ऐसे व्यक्तित्व का करेंगे हम बखान

कमल कान्त वत्स

डिस्को देख दमन कार्यो के सूख जाते हैं प्राण,
बलिया की धरती पर लिया जन्म,
सम दीप बनने का था काम।

नाम से ऊँचे हैं उनके काम,
संदीप पांडे नाम है उनका।
दमनकारियों से रक्षा करना काम है उनका।
शोषित वर्ग को देख द्रवित हुआ मन,
आशा परिवार की स्थापना कर लिया दम।
देशव्यापी जागरूकता अभियान है चलाया,
देशवासियों को उसने है जगाया।
देश की दशा में सुधार लाने का किया है जतन,
जिसके लिए समर्पित कर दिया है पूरा तन और मन।
शोषित वर्ग के लिए किया उल्लेखनीय काम,
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार से हुआ सम्मान।
छोटी उम्र में कर दिखाया कारनामा,
दमनकारियों ने इनका लोहा माना।



४०. निर्भीक, निडर, अडिग लोकतंत्र प्रहरी : जेम्स माइकल लिंगदोह

डॉ. ज्योत्स्ना शर्मा

भारत की पावन भूमि पर,
एक वीर सपूत जन्मा है।
मेघों के अनंत क्षितिज,
के गलियारों में पनपा है।

विश्वबंधुत्व, राष्ट्रप्रेम का करते उद्घोष,
कर्तव्यपथ पर अग्रसर करते सुघोष।
अब ना होगा अधिकारों का हनन,
नागरिकों का स्वर होगा मुखर।

चुनाव आयोग का स्तम्भ, निडर, निष्पक्ष और विनम्र
नागरिकों के अधिकारों की, रक्षा करने को सदैव तत्पर।
लोभ, क्रोध, मद, मान, मोह मत्सर ये टिकने ना पाएँ
जब लिंगदोह जैसे देश में, चुनाव आयुक्त हैं आयें।

हो जम्मू-कश्मीर, या गुजरात।
कृत संकल्प तुमने, दिया जनता का साथ।
रेमन मैग्सेसे से मिला तुम्हे मान,
सत्य को मिला जग में सम्मान।

लोकतंत्र की मशाल लिए,
प्रहरी, तुम ईमानदारी की मिसाल।
बढ़ाया देश का गौरव और सम्मान,
परचम फहराया विश्व पटल पर अभिराम।

जिसने जलाई परिवर्तन की मशाल,
जिसने लोकतंत्र को किया महान्,
वो निर्भीक, वो निडर, वो अडिग प्रहरी,
ऐसे लिंगदोह जी को मेरा शत-शत प्रणाम।



४१. 'हर बालक को मिले कलम का अधिकार' दिलवाने को कटिबद्ध शांता सिन्हा

डॉ. दुर्गेश नंदिनी

माता सीता, पिता आनंदम की संतान नील नेल्लोर वासिनी,
शांता सिन्हा शिक्षित हो बनी समता की वाहिनी,
अभागे, अबोध पारिवारिक बोझ तले थे बालश्रमिक,
श्रम से मुक्त कर उनका, बचपन सँवारने की धुन ठनी।

कठिन थी डगर, अविचलित थे पग नहीं डगमग,
निर्भीक लक्ष्य बड़ी, यूँ लेकर संगी साथी नगर-नगर,
बालश्रम नहीं एकमात्र सम्बल, सभी को समझाया,
तोड़ अर्गला बालश्रम, बचपन को विद्यालय भिजवाया।

सामाजिक बंधन से मुक्ति का किया अथक प्रयास,
चहुँ ओर फैला एमवी फाउंडेशन का प्रकाश,
सैकड़ों गाँवों से बाल मजदूरी को दूर भगाया,
बन एमवी की अध्यक्ष देश-विदेश में नाम कमाया।

सामुदायिक नेतृत्व से अपना जग में स्थान बनाया,
उपहार स्वरूप रेमन मैगसेसे पुरस्कार आपने पाया,
मिला पद्मश्री संग अल्बर्ट शंकर अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार,
सामाजिक सेवा थी वुमेन ऑफ द डिकेड का आधार।

बालश्रम अधिनियम में संशोधन करवाया,
किशोर मजदूरों को शामिल करने कदम उठाया,
'हर बालक को मिले कलम का अधिकार' लक्ष्य रहा,
विद्यालय का संग गरीबी से छुटकारे का मर्म रहा।

धन्य है सीता-आनंदम मात-पिता, पति सिन्हा अजय,
जिनकी प्रेरणा ने बाल श्रमिकों को स्वतंत्रता दिलवाई,
आँगनवाड़ी, बेटी पढ़ाओ-बेटी बचाओ का कर आह्वान,
मुफ्त शिक्षा व भोजन से बाल श्रम का किया निदान।



४२. भारतीय नौसेना की शान : शांतिदूत लक्ष्मीनारायण रामदास

मंजुरानी जैन

मुम्बई शहर में जन्म लिया, महाराष्ट्र का मान बढ़ाया।
बने भारत के गौरव वे, विश्वभर में यश-नाम कमाया।
इंडिया आर्म्ड फोर्स में रहकर, देश-सेवा का अवसर पाया।
तन-मन से हो पूर्ण समर्पित, मातृभूमि का कर्ज चुकाया।

लक्ष्मीनारायण रामदास ने, इंग्लैंड में प्रशिक्षण पाया।
वापस आकर नौसेना में, कमीशंड अधिकारी-पद पाया।
दहशत-शत्रुता रहे ना, किसी देश के दिल में कोई।
सैनिक मरे किसी देश का, सभी बार मानवता रोई।

भारत के लक्ष्मीनारायण, को थी प्रिय शांति की तान।
शांतिप्रिय पत्रकार पाक के, बने मित्र नाम अबदुर्हमान।
पाक-इंडिया शांति की खातिर, किया दोनों ने सोच-विचार।
फोरम फॉर पीस बनी संस्था, थी नीति जिसकी परम उदार।

किया संचालन संस्था का मिलकर, शांति-कार्य शुरू हुआ पुनीत।
संस्थापक अध्यक्ष बने रहमान, लक्ष्मी जी उपाध्यक्ष मनोनीत।
न हो सेना के हाथों में, कोई भी संहारक हथियार।
प्रेम-अहिंसा, शांति-सौहार्द से, मानवता का करें श्रृंगार।

शांतिपूर्ण लोकतांत्रिक ढंग से, कश्मीर की समस्या सुलझाएँ।
विषैली दूरियाँ बनी आपस की, बातचीत से दूर भगाएँ।
जनाधार मिला चारों ओर, साझा प्रयास हुआ प्रशंसित।
मैगसेसे पुरस्कार से हुए, एक साथ दोनों अभिनंदित।

कार्यरत रह नौसेना में, जिम्मेदारी इक और सँभाली।
कोच्ची केरल एकेडमी के, बने प्रमुख नौसेना-अधिकारी।
सन् इकहत्तर में पाक-युद्ध में, युद्ध-कौशल दिखलाया भारी।
बना बांग्ला राष्ट्र अलग से, जीती जनता, सत्ता हारी।



४३. मानवता की सच्ची देवी - विश्वनाथन शांता

डॉ. सीमा कुमारी चौधरी

नमन तुम्हें हे मानवता-देवी
देश की तुम हो अनमोल रतन
सादा जीवन उच्च विचार
गर्वित जिस पर सारा संसार।

व्यक्तित्व तुम्हारा सदा रहा तेजमय
उगता सूरज-सा विश्वास
कठिन मेहनत, निश्छल प्रेम
यही उसका गहना अनमोल

अबला जीवन तेरी यही कहानी को
जिसने धिक्कारा था
एक नयी पथ को जिसने
सहज अपनाया था।

प्रबुद्ध परिवार की सुख-सुविधा कहाँ रास आयी उसको
अहंकार, घृणा, दुर्बुद्धि से रही जो कोसो दूर।
जिसने कर्म को धर्म, धर्म को कर्म माना था
कर्म की सुफल धरा पर, निःसहाय, अहसाय, बेबस मुस्कुराया था।
देख तेरे जन कल्याणी स्वरूप को,
हैरत में था – सारा संसार
घोर संघर्ष कर प्रथम कैंसर अस्पताल बनाया।
मायूसों के चेहरे पर जीने की चमक को चमकाया।

पद्मश्री, पद्मभूषण, रेमन मैग्सेसे, पद्मविभूषण
सब थे तुझ पर निहाल।
हे मानवता की देवी !
तुझे नमन, तुझे नमन, तुझे नमन।



४४. भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन की ओर अग्रसर अरविन्द केजरीवाल

डॉ. प्यारेलाल आदिले

गोविंद-गीता के घर सिवानी में जन्म लिया,
खड़कपुर सोनीपत हिसार में शिक्षा पाई,
उत्तीर्ण की संघ लोक सेवा आयोग परीक्षा,
केजरीवाल परिवार की थी शोभा बढ़ाई।

रोटी, कपड़ा, मकान संग शिक्षा लक्ष्य बना,
बिजली, पानी, सड़क संग स्वास्थ्य उद्देश्य था,
जन मसीहा बन किया भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन,
ऐसे नेता का सदा नहीं होता राजनीति पदार्पण।

नेता जन-जन के, राजनीति सोच है बेमिसाल,
अरविंद केजरीवाल बने जिम्मेदारी में मिसाल,
सादगी-सुचिता को राजनीति में अपनाया,
दूर हटो, लुटेरों, भ्रष्टाचारियों को ललकारा।

पंक कह राजनीति को अन्ना ने चेताया,
भोग, लिप्सा, स्वार्थ को परम शत्रु बताया,
केजरीवाल ने भू के बेटे का फर्ज निभाया,
जड़ खोदने भ्रष्टाचार की, लोकपाल बिल लाया।

जड़ें हिला डाली, भ्रष्टाचार उखाड़ना लक्ष्य रहा,
समझौता वादी प्रवृत्ति के विरुद्ध मन बना,
जनसेवा को आधार बना, बनाया जनाधार,
'आम आदमी पार्टी' हित राजनीति उद्धार।

मानवाधिकार का रक्षक बन कदम बढ़ाया,
जन कल्याण प्रतीक, जन सेवक मिसाल बना,
देकर रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, जग ने मान बढ़ाया,
मानवता का प्रतीक बन भारत का लाल आया।



४५. स्वर्णिम समाज के निर्माण का पथ प्रदर्शक - पालागुम्मि साईनाथ

डॉ. सपना

बेजुबानों की जुबान बन आया संत वो,
आचरण में सत्यता, ओजस्वी, आत्मज्ञानी जो,
लख विश्व में अमानवीयता के दौर को,
व्यथित हृदय चल दिया समाज कल्याण को,
जीवन समर्पित देखो कर रहा है संत वो।

जन्म लिया चैन्नई में, नाम पालागुम्मि साईनाथ है
मिला जिसे विश्व प्रसिद्ध रेमन मैग्सेसे पुरस्कार है।
जन-जन की पीड़ा पहुँचाने बहरे कानों तक
बनी लेखनी-हथियार लिख दी कहानियाँ अन्याय की, ऐसा रचनाकार हैं वो।

नंगे-भूखे आत्महत्या को मजबूर किसानों की,
याद दिलाता मृत्यु यह पूरी कृषि अर्थव्यवस्था की,
कहता है हजारों आखों देखी, समाज बहिष्कृत,
अस्पृश्यता झेलते, सेपटिक टैंकों में दम तोड़ते दलितों की !

लिखता है समानता, न्याय और मानव अधिकार के लिए,
कहता है मानव-रूप मानव का सर्वोत्तम मानव अधिकार,
२१वीं सदी की सबसे बड़ी लड़ाई, गरिमापूर्ण जीवन का प्राप्य,
दिखाता है आईना पूँजी के लिए बिक गयी मीडिया को।

मानता है अपने कार्य को पवित्र सत्य उद्घाटक साहित्य-सा,
लिखा जा सकता है सजल नयन, द्रवित हृदय से मात्र,
देखता है स्वप्न आजाद देश की गुलाम जन-मुक्ति का,
पीपुल्स आर्काइव ऑफ रूरल इंडिया की कर स्थापना।

दिखा दिया गरीब के जीने का तरीका,
अकाल व भूख का जग में बना जानकार,
सिखाया परिस्थितियों से निपटने का सलीका,
स्वर्णिम समाज के निर्माण का पथ प्रशस्त कर रहा है संत वो।



४६. शिशु की पहली धुली मुस्कान - मन्दाकिनी आमटे

प्रियंका सिंह

ओ मंदा!
मंद गति-सी बहती जाती
चट्टानें रह-रह कर रोके तुम्हें
तुम उन्हें चूमती चलती जाती
किसी ने दे मारे हैं पत्थर
घाव रिसता, तुम जीवन को सींचती
ओ मंदा! तुम नदी हो क्या?

श्वेत फूल खुशबू को भूल
उड़ चला है जंगल की ओर
लिपट रोया कुम्हलाते पत्तों के संग
उन्हें गुदगुदाया हँसाया
आँसुओं से सींचा
बन गया है उन्हीं का हिस्सा
ओ मंदा! तुम जंगली फूल हो क्या?

ज्ञान को लिए साथ
न रत्ती भर भी अहंकार
साथी के हाथों को थामे
ज्ञान का पारस छूता अनगढ़ काया
इस कला के लिए 'रेमन मैग्सेसे पुरस्कार' गया नवाज़ा
ओ मन्दा! तुम शिल्पकार हो क्या ?

तुम उगते सूरत की पहली छवि
किसी पौध की पहली जड़
अबोध शिशु की पहली धुली मुस्कान
ओ मंदा! तुम आदिवासी हो क्या?



४७. समाज सेवा को संकल्पित - डॉ. प्रकाश बाबा आमटे

डॉ. अभिषेक मिश्रा

महाराष्ट्र का पुत्र
पेशे से डॉक्टर
समाज सेवा का संकल्प
बनाया एक प्रकल्प।

घर परिवार का साथ
मिले सहयोग के हाथ
तपस्या का बल
कर्मठता प्रबल।

जनजातियों का कल्याण
संकल्प का प्राण
सेवा कार्य सतत
मंजिल तक ले जाता पथ।

वन्य जीवों से प्रेम
पालन-पोषण दिन-रैन
चाहे बाधा हो जटिल
पर सेवा संकल्प अटल।

त्याग और परिश्रम
बना जीवन का क्रम
घने वनों के बीच
प्रकृति को प्रेम से सींच।

मानवता से प्यार
प्रेरणा का संचार
मंजिल तक बढ़ते ऐसे
सम्मान मिला मैगसेसे।



४८. अप्प दीप - दीप जोशी

डॉ. मृदुला शर्मा

कर सके हो नाम अपना सार्थक तभी ।
जोश संग 'दीप' बन जाग सके तभी॥
देव-भूमि धन्य, जन्म पुरियाग में,
कृषक पुत्र उन्नत प्रयागराज में। कर सके हो....

उच्च-शिक्षा को गया मेसेचुसेट्स में,
आया लौट, क्रांति भर दी स्वदेश में॥
धारणा-विचारणा भी जुड़ सके तभी।
तकनीक और प्रबंधन संग चले तभी।
एन.जी.ओ. नाम जैसे बन पड़े तभी॥ कर सके हो...

वेदना जब स्वजनों की कंठ-बद्ध होती है।
बाल मेधा परिवर्तन को कोटि-बद्ध होती है।
जन की त्रास हरण को जो तैयार होता है,
शिव को उस दीप से बहुत प्यार होता है॥ कर सके हो...

कृषि उद्यम को दिशा देकर,
आजीविका समवर्धन को स्वस्थ दशा देकर।
नेतृत्व, इच्छा-शक्ति, सलाह, सत्कार्य, हितकर,
उपहार 'प्रदान' का प्रदान कर सके तभी। कर सके हो...

अप्पदीप जोश संग जग सके तभी॥
योजना भी मूर्त रूप पा सकी तभी
'रेमन-मैग्सेसे' पुरस्कार प्राप्त कर लिया,
धन्य कर्मदीप, धन्य मात-पितु हुए॥ कर सके हो...

'गिरिजा' 'उदय, युगल दीप, मंगल-शुभ-कामना॥
'आनंद' मय कर्म क्षेत्र, पा सके तभी,
धारणा-विचारणा से जुड़ सके तभी।
'जोश' संग 'दीप' बन सके तभी॥ कर सके हो...



४९. जाग्रत चेतना की प्रतिमान - नीलिमा मिश्रा

आर्यावर्ती सरोज आर्य

ब्राह्मण कुटुम्ब में लेकर जन्म,
किया उसने अति अद्भुत कर्म।
विश्व पटल पर हुई सम्मानित,
सार्थक किया स्त्री का धर्म।

भारत भूमि पावन करने,
जन्म लिया एक बेटी ने।
घर-आँगन किलकारी गूँजी,
भवन धन्य किया बेटी ने।
निर्मल-निर्मला कोख कर,
गर्भ मान दिया बेटी ने।

जलगाँव महाराष्ट्र भूमि पर,
बहादुरपुर गाँव के प्रांगण।
ठान लिया उसने मन में,
जाग्रत चेतना हो जन-जन।

सुख-सुविधाओं का कर त्याग,
मान दिया जीवन धर्म को।
कर्म पथ पर होकर अग्रसर,
दृढ़ संकल्पों के साथ चली।
वह मेहनतकश कड़ी धूप में,
दुष्कर पथ पर बढ़ी चली।

रोज़गार मिले महिलाओं को,
विज्ञान केंद्र की नींव रखी।
भगिनी निवेदिता नाम दिया,
बन गई उसकी कर्मस्थली।

जन-जन में स्वालम्बन मंत्र फूँका,
क्षितिज पार कर गई कीर्ति रेखा।
एशिया का नोबेल-सम पुरस्कार,
मैग्सेसे हासिल कर किया चमत्कार।



५०. सौर पुंज के सूर्य – हरीश हांडे

अलका अस्थाना

माटी का कर्ज चुकाने आया,
हरीश हांडे ने फर्ज निभाया,
ज्ञान पुंज की दीपशिखा से,
पाया जीवन का उजियाला।

सौर ऊर्जा का उपहार दिया,
घर-घर को प्रकाश दिया,
स्वावलम्बी थी साथ बनाया,
गाँवों में स्वाभिमान जगाया।

कर्नाटक में उडुपी का सपूत,
किया संघर्ष अथक तपोपूत,
गरीबों का उत्थान किया,
भारत का जग में नाम किया।

सौर ऊर्जा थी जिसका आधार,
दे दी ई-शाला गाँवों को उपहार,
बच्चों को शिक्षा का मिला साथ,
रचनात्मकता थी जिसका आधार।

स्थापित कर सेल्को इंडिया,
ऊर्जा का शुभ संचार किया,
पद पाया जो प्रबंध निदेशक,
कंपनी सुरभित विस्तार किया।

दो हजार पाँच की छटा आई,
साथ सात की घटा घहराई,
वैब फाउंडेशन प्राइज पाया,
प्रकृति का सपना घहराया।

हांडे ने प्रोजेक्टर टैबलेट,
का भी अनुपम कार्य किया,
लाखों परिवारों को बिजली
देकर गौरव का काम किया।

अशोक फेलो अलौकिक छवि,
हुआ उदय कर्नाटक का रवि,
हासिल किया मैग्सेसे पुरस्कार
कर्नाटक का राज्योत्सव प्यार।



५१. ग्रामीण विकास के लिए कटिबद्ध - कुलन्देई फ्रांसिस

श्रीमती सुमन लता शर्मा

भारत के दक्षिण में चमका एक सितारा,
वसुधा का लाल कुलन्देई फ्रांसिस प्यारा।
ना था राजघराना, ना सम्पदा का खजाना,
गुदड़ी का लाल सम ईश्वर आशीष जाना।

नहीं खेल खेले अल्हड़ बचपन के उसने,
गरीबी, भूख, पीड़ा, तंगी ही देखी जिसने।
थी ममता की छाँव, पर उम्मीदें घनेरी,
स्वजन की पीड़ा ने शिक्षा दी अनोखी।

मेहनत, लग्न संग कर्म पथ पर चलना सिखाया,
बदला जीवन, साहूकारों से मुक्ति-बीड़ा उठाया।
कंटकाकीर्ण पथ था जिसे स्वयं ही अपनाया,
सामाजिक कार्यकर्ता बन ग्राम विकास छाया।

आई वी. डी. पी. से किया निर्धनों का हित,
रात्रि पाठशाला संग संचालित चिकित्सा केंद्र।
माइक्रो वाटर रोड, बना दिए सैकड़ों चेक डेम,
मिला धरतीपुत्र को लाभ, आया ज्यों सावन।

गाँवों में स्वास्थ्य-स्वच्छता की अलख जगायी,
आधुनिक शिक्षा कम्प्यूटर की उनको सिखलाई।
स्वावलम्बी अनुशासित संगठन बनाया,
स्वयं सहायता समूहों की कर स्थापना।

ईमानदारी से जीवन-पथ पर बढ़ना सिखाया,
ग्रामीण समाज का विकास जीवन स्तर सुधारा।
तीस बरस की अथक साधना का फल पाया,
मिला रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, मन हर्षाया।



५२. समाज सेवा के सूर्य - अंशु गुप्ता

अरविन्द भारत

अंशुमाली अविरल उजास का अंशज है
मानव जीवन सेवा का अनहद वंशज है
वो आदि-अंत है, अनंत और दिग्दिगन्त है
सेवा सम्मान सद्भाव की गूँज से जीवन्त है।

जम्बूद्वीपे भारत खण्ड का मानव रूपी सूरज है
निज राष्ट्र मान बढ़ाकर जीवन जिसका पूरब है
सम्मानों की स्वर्णिम कड़ी में चमका अंशु सूरत है
संघर्षों से गढ़कर तपकर निखरी विराट मूरत है।

दीन-दुर्बल के आर्द्र स्वरो को अनहद गूँज दिया
मृत कौम में मानवी प्राण अनवरत फूँक दिया
स्वयं का जीवन मानव सेवा में सहर्ष वार दिया
दीन-दरिद्र को वस्त्र, अन्न निःस्वार्थ उपहार दिया।

ग्राम्य जल योजना से कृषि जीवन का उत्थान किया
वस्त्र क्रांति से कर्तव्य समाज का अनुसंधान किया
मातृ शक्ति को अवसर ज्यादा देकर स्वाभिमान दिया
पड़ी आपदा जब भारत में गूँज से सेवा स्वरनाद किया।

मानव जीवन में स्नेह, सेवा, सहयोग का आदर्श भरा
स्वार्थपरक समाज के बेहया गालों पर कर्म प्रहार धरा
आना-जाना बस खाना-जीना नहीं मानव जीवन लक्ष्य
मानव सेवा से भारत में सहयोग भाव का रण-राग भरा।

अविरल आँ भारत में सदा विरल से सूरज अंशु
विराट व्यक्तित्व को अकिंचन शब्द से क्या स्वर दूँ
भूखे-नंगे दौर से देश को निज कर्मों से उबार दिया
हे अंशु तुम्हें मैं आजन्म भारत का सजीव सूरज कहूँ।



५३. शुचिता के प्रतीक : संजीव चतुर्वेदी

सौम्या पाण्डेय 'पूर्ति'

हिंदुस्तान की धरती पर जब भ्रष्टाचार ने किया प्रहार,
निडर मुखर हो सामने आये संजीव चतुर्वेदी करने उद्धार ।
सरकारें भी डोल गई जब किये उजागर केस अपार,
हुई व्यवस्था सुदृढ़ भरी जब इस सपूत ने दी हुंकार ।

सामाजिक कर्तव्य का बीड़ा निर्भय होकर लिया उठाय,
बार-बार ट्रांसफर से भी भयमुक्त कदम थे नहीं डिगाय ।
झूठे पुलिस मुकदमों में भी कितनी बार थे गए फँसाय,
राष्ट्रपति भी समझ गए सब खेल मुक्त किया भए हर्षाय ।

हरियाणा के इस अफसर ने कुरुक्षेत्र में कसी नकेल,
नहर घोटाले वालों को पकड़ाया करवा दी फिर जेल ।
वन घोटालों की हरियाणा में मच गई थी रेलमपेल,
सब घोटाले ध्वस्त हुए जब किये इरादे सबके फेल ।

डिप्टी डायरेक्टर के पद पर एम्स ने उनको किया बहाल,
सी.वी.ओ. बनकर के उनने जीना सबका किया मुहाल ।
दो वर्षों में भ्रष्टाचार के सैकड़ों मामले लिए निकाल,
बड़े-बड़े सरकारी अफसर को पल में कर दिया निढाल ।

रुके नहीं कभी डिगे नहीं चाहे जितने आरोप लगे,
पीछे पथ से हटे नहीं मन में संकल्प की ज्योत जगे ।
डटकर निश्चल खड़े रहे चाहे जैसी भी जंग सजे,
हर विरोध को शीश धरे वो मानवता के रंग रँगे ।

बन बसंत से खिले रहे चाहे पतझड़ के बीच रहे,
जग गर्वित ऐसी विभूति पर हर्षित जन सामान्य रहे ।
रेमन मैग्सेसे जैसा सम्मान इन्हें शिरोधार्य रहे,
सत्य सुपथ पर बड़े रहे सर पर ईश्वर का हाथ रहे ।



५४. स्वच्छता की पहचान : बेजवाड़ा विल्सन

रेनू माथुर

कहते हैं बुरी संगत में जाने की,
कभी भी नहीं करना तुम भूल।
लेकिन कीचड़ में फिर भी सदा,
खिलते देखे हैं हम सबने फूल॥

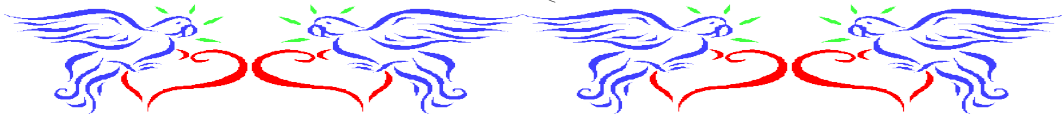
खिला कमल था हरिजन के घर,
बेजवाड़ा विल्सन नाम धराया।
स्नातक शिक्षा युनिवर्सिटी में पायी,
राजनीति शास्त्र में जौहर दिखलाया॥

ज्ञान का प्रकाश जग में फैलाया,
पड़ोसी बच्चों को अध्ययन करवाया।
मैला ढोने की अपवित्र प्रथा के प्रति,
विल्सन के मन में विद्रोह सुलगाया।

मलिन तो होते हैं वह जो करते रहते हैं,
सबके हृदयों पर मलिन वाणी से घात।
हरिजन के भी हैं अधिकार सम्मान,
मिले उन्हें रोजगार, बिन पूछे जात-पात॥

सर पर मैला ढोने के विरुद्ध कानून बनवाया,
लाखों लोगों को इस कुप्रथा से मुक्त कराया।
पंचवर्षीय योजनाओं में भी प्रबंध कराया,
भीम यात्रा अभियान पूरे देश में चलाया।

अधिकारों के लिए जन संधर्ष अपनाया,
रेमन मैग्सेसे पुरस्कार, विल्सन ने पाया।
बत्तीस वर्षों की जनसेवा, सतत समर्पित जीवन,
अधिनायक बन उभरे हैं बेजवाड़ा विल्सन॥



५५. कला की शक्ति के प्रति प्रतिबद्ध - टी. एम. कृष्णा

सपना सक्सेना दत्ता 'सुहासिनी'

जन्म हुआ चेन्नई में, एक ब्राह्मण परिवार,
टी.एन. कृष्णन नाम है, मैग्सेसे पुरस्कार,
माँ कृष्णा जी ने दिया, सँग दूध के ध्यान,
छःवर्ष की आयु से, विधिवत् पाया ज्ञान।

प्रथम प्रस्तुति दे रहे, आयु ग्यारह साल
तदन्तर अभ्यास से, करते गए कमाल
कर्नाटक संगीत का, कलात्मक प्रतिमान
सामाजिकता के लिए, नव स्थापित मान।

शास्त्रीय संगीत यह, सनातन की खोज,
दरबारों मंदिरों में, होते गुंजित रोज,
सांस्कृतिक संरक्षण से, हुआ जटिल आदेश,
जाति वर्ग विशेष का, था होने लगा प्रवेश।

बन्धन-कारा तोड़ कर, जोड़े दिए नए तार,
गायन-वादन संगीत का, किया नवल विस्तार,
श्रीलंका तक ले गए, कलात्मकता का भाव,
युद्ध पीड़ित देश में, भरा गीत का चाव।

दो हज़ार तेरह तलक, करते रहे प्रयास,
पुनरुद्धार संगीत पर, लगते रहे कयास,
शास्त्रीय संगीत युवा संघ के बने अध्यक्ष,
सभी वर्गों के लिए, खोले द्वार प्रत्यक्ष।

लोकतंत्र संग कला प्रतिबद्धता की थी धार,
पद्मश्री, पद्मभूषण, रेमन मैग्सेसे पुरस्कार,
सपना कृष्णा का कहे, सुहासिनी हो मूल,
मृदुल मधुर संगीत से, गुंजित हो हर कूल।



५६. मनोरोगियों के मसीहा - डॉ. भरत वातवानी

श्रद्धेश नंदिनी

भरत वातवानी जन्मे थे, कोलकाता के पास,
पाचवें वर्ष की आयु में, मुम्बई किया निवास,
वंचित हुए पितृछाया से, बारहवें वर्ष के पास,
कम आयु में ही बाधाओं ने फेंका अपना पाश।

अविचलित आगे बढ़े, चिकित्सक की शिक्षा पाई,
नियति को मंजूर न था, उन्हें डॉक्टरी न भाई,
लख दशा मनोरोगियों की हुए हैरान परेशान,
साइकेट्रिक में डिप्लोमा की तब आन।

ग्रस्त रोग से गटर-जल पीते देखा जो लाल,
वातवानी दम्पति की आत्मा हुई बेहाल,
स्मिता की स्मिति ने दिया कदम-कदम पर साथ,
प्रारम्भ हुई मनोरोगियों की गली-गली तलाश।

निःशुल्क ईलाज संग परिवार से मिलन लक्ष्य ठान,
बोरीवाली क्लिनिक में सार्थक किया प्रयास,
बाबा आम्टे ने प्रेरक बन ली तभी ऊँगली थाम,
पुनर्वास केंद्र खोलना, आया विचार महान।

"श्रद्धा पुनर्वास फाउंडेशन" कर्जत में हुआ साकार,
मनोरोगियों के लिए बना यह अद्भुत सेवादार,
हजारों रोगियों को स्वास्थ्य लाभ दे घर पहुंचाया,
सामाजिक मान्यता हेतु अदालत-दर खटखटाया।

निष्काम सेवा निरन्तर, दम्पति ने ख्याति पाई,
अथक सेवा पर मिला रेमन मैग्सेसे पुरस्कार,
सिखलाया जन-जग को सभी हैं जीवन के भागीदार,
मनोरोगियों को भी है सम्मानित सामाजिक अधिकार।



५७. स्वर्णिम विहान - सोनम वांगचुक

अमिता त्रिपाठी 'अशेष'

स्वर्णिम सोनम जन्में थे, सुन्दर प्रकृति के गाँव में।
माता मुख से शिक्षा पाई, दिव्य ममता की छाँव में।
पर्वत पेड़ नदी आकाश, बचपन का निर्मल वतास।
शिक्षा का सूरज बन चमके, भारत भूमि भव्य आकाश।

सोच सुनहरी लेकर आए, प्रकाश का बादल बन छाए।
सहज ही समझा बालक मन को, शिक्षा सीधी सरल बनाए।
शिक्षा पद्धति असफल थी, पर बच्चे निर्मल सच्चे थे।
माध्यम की दूरी जो मिटाई, देखा वह ही अच्छे थे।

मातृभाषा में परिपक्व हुए, प्राप्त अनेक भाषाओं का ज्ञान।
अप्रतिम अभिनव अभियंता, "नवल आशा का प्रखर अभियान",
विज्ञान को समाज से जोड़ा, शिक्षा का समूल संज्ञान।
प्रखर बुद्धि के प्रकांड मनस्वी, करते मानवता आह्वान।

मिट्टी से जुड़े, मिट्टी को समझा, आत्मसात् मिट्टी विज्ञान।
मिट्टी का ही भवन बनाकर दीप प्रकाशित शिक्षा अभिज्ञान।
उपयोगी शिक्षा पद्धति, क्रियात्मक शिक्षा आयाम।
एक मनस्वी, एक तपस्वी, कम है जितना करो गुणगान।

परहित जीवन कलादक्ष हो, सुविचारों से सुसज्ज हो।
कर्मों की समिधा पावन से, हितकारी सामाजिक यज्ञ हो।
रेमन मैग्सेसे पुरस्कृत, पुरस्कार से हुए अलंकृत।
भारतपुत्र, भारतनायक से भारत माता हुई चमत्कृत।

सोनम तुम स्वर्णिम विहान हो।

माता भारत की सच्ची सन्तान हो।

मानवताहित मानवपथ पर मानवता का पुनीत गान हो।
स्वर्णिम सूरज भारत माँ के विश्व पलट पर दैदीप्यमान हो।

मानवता का मज़हब हो तुम, मानवता का मार्तण्ड हो।
मिटे अशिक्षा, सुन्दर शिक्षा, भ्रम की भिक्षा खण्ड-खण्ड हो।
कुछ सोनम यदि और भी आयें, प्रज्ञा की ज्वाला प्रचण्ड हो।
विश्व गुरु भारत बन जाए, भारत भूमि अविरल अखण्ड हो।



५८. जो रुका नहीं, जो झुका नहीं : रवीश कुमार पाण्डेय

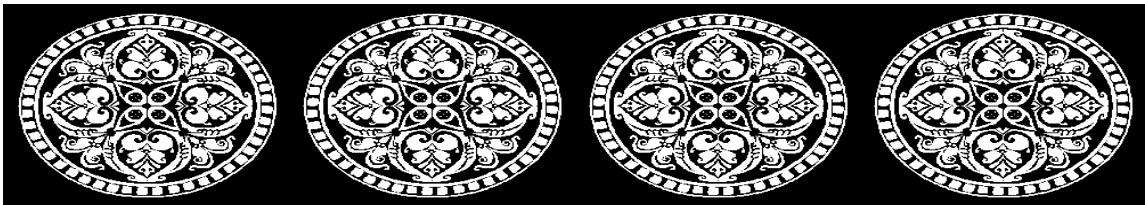
अनुरागेन्द्र कुमार निगम

जो रुका नहीं, जो झुका नहीं, जो डरा नहीं, अभिमानी है,
भारत का सच्चा सेवक वो, भारत की अमिट कहानी है.
है राष्ट्र प्रेम जिसके दिल में, जिसकी बस कलम निशानी है,
है नाम 'रवीश' उसका जिसका, जग में न कोई सानी है.

जब शून्य हुए अभिव्यक्ति के, सारे मंजर, सारे क्रंदन,
बन बैठे चारण कलमकार, करते सत्ता का अभिनंदन.
इक वाक् विभा गूँजी नभ में, आशा दी जिसने जन-जन में,
है समर शेष आज्ञादी का, आशा दी जिसने मन-मन में.
खोलीं परतों पे कई परत, है जिसकी निडर जवानी है,
है नाम 'रवीश' उसका जिसका, जग में न कोई सानी है.

जब न्याय हुआ दुष्कण्टक पथ, राहों पे शूलें ही मिलते,
धृतराष्ट्र बनी नगरी सारी, अर्जुन ढूँढ़ें से नहीं मिलते.
फिर इक कबीर आया जग में, आँखन देखी कहता ही फिरा,
हुए जुल्म सियासत के उस पर, इक इंच भी पीछे नहीं डिगा.
खबरों की खबरें लेता रहा, सच्चाई की जिसमें रवानी है,
है नाम 'रवीश' उसका जिसका, जग में न कोई सानी है.

खंड-खंड किये वो शिलाखंड, जो सत्ता के हरकारे थे,
इक दीप जलाया आशा का, जहाँ घने अँधेरे फैले थे.
हर जन-गण की आवाज़ बना, ईमान बना, सम्मान बना,
निर्बल के निकले अशकों की, पीड़ा की पहचान बना.
"रेमन मैग्सेसे" मिला जिसे, जो जन-जन की मुखरित वाणी है,
है नाम 'रवीश' उसका जिसका, जग में न कोई सानी है.



५९. राष्ट्राध्यक्ष और आध्यात्मिक गुरु दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो

डॉ. उषा देव

नहीं जन्में भारत में वे, खुद को भारत-सुत कहते हैं
छोड़ी जब से मातृभूमि, तब से भारत में रहते हैं।
राष्ट्राध्यक्ष हैं तिब्बत के, निर्वासन पीड़ा सहते हैं
अध्यात्म गुरु अग जग के, अपने को भिक्षु कहते हैं।

शैशव में घोषित पहचान हुई, दलाई लामा अवतार बने
शिक्षा-दीक्षा तब गहन हुई, ज्ञान गुण के भण्डार बने
नहीं चाह मोक्ष, लिया पुनर्जन्म, मानवता रक्षा की खातिर
सत्य, अहिंसा, दया, करुणा, बने सभी की श्रृद्धा के पात्र।

सद्गुणों के हे पुंजभूत, पर्यावरण क्रांति के अग्रदूत
सच में हो तुम समासीन, राम, कृष्ण, बुद्ध और अवधूत
हे परम पावन, हे बोधिसत्व! युगों रहेगा नाम तुम्हारा
याद करेगा तिब्बत ही क्या, गुणगान करेगा विश्व सारा।

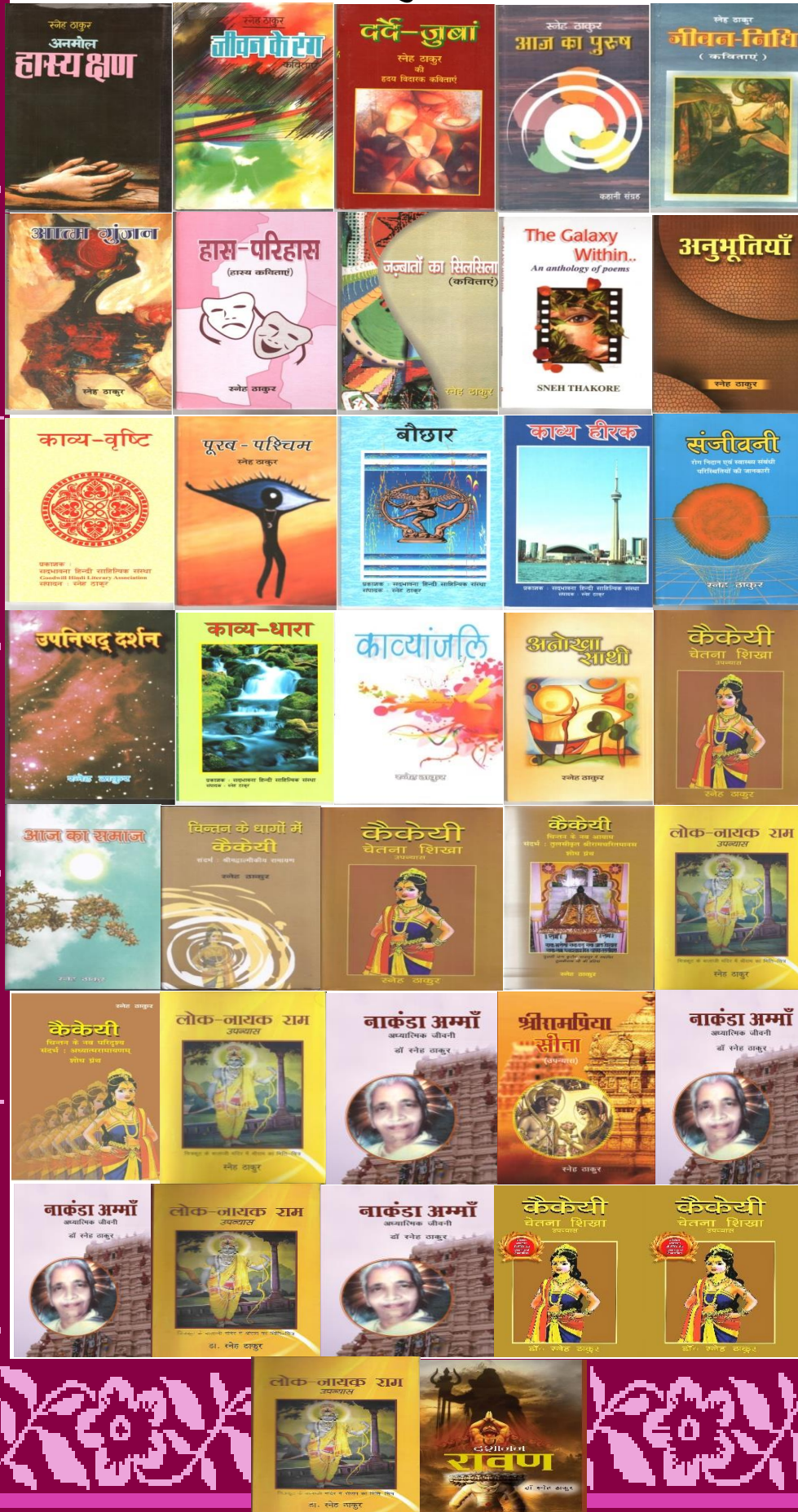
चीन लुटेरे ने हड़प ली है, मातृभूमि जो स्वदेश तुम्हारा
तिब्बती निर्वासित प्रजा को, बौद्ध भारत ने दिया सहारा
हुआ कुपित चीन भारत पर, मित्र बन छूरा पीठ में मारा
कब्जाई भारत की भूमि, नहीं छोड़ा पर साथ तुम्हारा।

जो कहते रहे स्वयं को स्वयंभू, सबने ही कर लिया किनारा
संयुक्त राष्ट्र संघ भी बेबस, कई प्रस्ताव पास कर हारा
भारत की रही रीति सदा, अनजान क्षितिज को दिया सहारा
परम पावन गर्भ नाल का रिश्ता, सदा रहेगा साथ हमारा।

लोकतंत्र के तुम पुजारी, जन-जन के अधिकार हितैषी
पाँच-सूत्री प्रस्ताव तुम्हारा, विश्व शांति की आधारशिला
धूर्त चीन चाहे न माने, विश्व ने तुम्हें सम्मान दिया
रेमन मैग्सेसे मिला साथ ही, नोबेल शांति पुरस्कार मिला।



डॉ. स्नेह ठाकुर का रचना संसार





डॉ. स्नेह ठाकुर की प्रकाशित पुस्तकें

| | |
|---|---|
| दशानन रावण | (उपन्यास) |
| लोक-नायक राम | (उपन्यास, चतुर्थ संस्करण) |
| कैकेयी : चेतना-शिखा | (उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, चतुर्थ संस्करण) |
| कैकेयी : चेतना-शिखा | (उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, तृतीय संस्करण) |
| नाकंडा अम्माँ | (अध्यात्मिक जीवनी, चतुर्थ संस्करण) |
| लोक-नायक राम | (उपन्यास, तृतीय संस्करण) |
| नाकंडा अम्माँ | (अध्यात्मिक जीवनी, तृतीय संस्करण) |
| नाकंडा अम्माँ | (अध्यात्मिक जीवनी, द्वितीय संस्करण) |
| श्रीरामप्रिया सीता | (उपन्यास) |
| नाकंडा अम्माँ | (अध्यात्मिक जीवनी) |
| लोक-नायक राम | (उपन्यास, द्वितीय संस्करण) |
| कैकेयी : चिन्तन के नव परिदृश्य - संदर्भ : अध्यात्मरामायण (शोध-ग्रन्थ) | |
| लोक-नायक राम | (उपन्यास) |
| कैकेयी : चिन्तन के नव आयाम - संदर्भ : तुलसीकृत श्रीरामचरितमानस (शोध-ग्रन्थ) | |
| कैकेयी : चेतना-शिखा | (उपन्यास, साहित्य अकादमी म. प्र. अखिल भारतीय 'वीरसिंह देव' पुरस्कार सम्मान, द्वितीय संस्करण) |
| चिन्तन के धागों में कैकेयी - संदर्भ : श्रीमदवाल्मीकीय रामायण (शोध-ग्रन्थ) | |
| आज का समाज | (सामाजिक लेख-संग्रह) |
| कैकेयी : चेतना-शिखा | (उपन्यास, राष्ट्रपति भवन पुस्तकालय में संग्रहित) |
| अनोखा साथी | (कहानी-संग्रह) |
| काव्यांजलि | (काव्य-संग्रह) |
| काव्य-धारा | (संकलन, संपादन एवं प्रकाशन) |
| उपनिषद् दर्शन | (दार्शनिक एवं अध्यात्मिक) |
| संजीवनी | (स्वास्थ्य सम्बन्धी आलेख) |
| काव्य हीरक | (संकलन, संपादन एवं प्रकाशन) |
| बौछार | (संकलन, संपादन एवं प्रकाशन) |
| पूरब-पश्चिम | (आप्रवासी सम्बन्धित आलेख संग्रह) |
| काव्य-वृष्टि | (संकलन, संपादन एवं प्रकाशन) |
| अनुभूतियाँ | (काव्य-संग्रह) |
| The Galaxy Within | (A collection of English poems) |
| ज़ुबानों का सिलसिला | (काव्य-संग्रह) |
| हास-परिहास | (हास्य कविताएँ) |
| आत्म-गुंजन | (अध्यात्मिक-दार्शनिक गीत) |
| जीवन-निधि | (काव्य-संग्रह) |
| आज का पुरुष | (कहानी-संग्रह) |
| दर्द-जुबाँ | (नज़्म व ग़ज़ल संग्रह) |
| जीवन के रंग | (काव्य-संग्रह) |
| अनमोल हास्य क्षण | (नाटक-संग्रह, फेडरल गवर्नमेन्ट, कैनेडा द्वारा अधिकतम अनुदान से सम्मानित) |

प्रकाशक व वितरक

स्टार पब्लिकेशंस (प्रा.) लि., ४५ बी., आसफ अली रोड, नई दिल्ली - ११०००२, भारत
 Star Publishers' Distributors, 55, Warren Street, LONDON - W1T 5NW, England
 दिल्ली प्रेस की सरिता व अन्य राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी रचनाएँ प्रकाशित